ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

आश्विन २०७६ अक्टूबर २०१९

शुभ दीपोत्सव

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दिल्ली शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ **17 सितंबर** शाम 6:30 बजे

अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।

हिंदी साहित्य

द्वारा – डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

(वैकल्पिक विषय / वीडियो क्लासेज़)

सामान्य सत्र	तीव्र सत्र (प्रतिदिन दो कक्षाएँ)
आरंभ : 23 सितंबर	आरंभ : 25 सितंबर
दोपहर 3:00 बजे से	दोपहर 4 से 6:30 तथा शाम 7 से 9:30 बजे

सीसैट बैच

बैच–1 18 सितंबर, सुबह 8 बजे	बैच–2 18 सितंबर, शाम 6:30 बजे
बैच–3 23 सितंबर, दोपहर 3:30 बजे	बैच–4 6 नवंबर, सुबह 11:30 बजे

BASIC ENGLISH CLASSES

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ

23 सितंबर शाम 6:00 बजे

प्रयागराज शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ **4 अक्तूबर** प्रातः 8:00 बजे

अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।

हिंदी साहित्य

द्वारा – डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

(वैकल्पिक विषय / वीडियो क्लासेज़)

सामान्य सत्र	तीव्र सत्र (प्रतिदिन दो कक्षाएँ)
आरंभ : 15 सितंबर	आरंभ : 15 सितंबर
प्रातः 11:15 बजे से	दोपहर 1:30 से 4:00 तथा शाम 4:30 से 7:00 बजे

दृष्टि मॉक टेस्ट सीरीज़ कार्यक्रम

IAS

प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़-2020

सामान्य अध्ययन और सीसैट

प्रारंभ **1** सितंबर से

UPPSC

प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़-2019

सामान्य अध्ययन और सीसैट

प्रारंभ **8** सितंबर से

दिल्ली और प्रयागराज दोनों केंद्रों पर

ऑनलाइन और ऑफलाइन

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों में

☼ दिल्ली (मुखर्जी नगर) एवं प्रयागराज (सिविल लाइन्स) के अतिरिक्त हमारी कोई शाखा नहीं है। भ्रामक विज्ञापनों से बचें।

दिल्ली शाखा का पता : दृष्टि टेस्ट सीरीज़ सेंटर, 707, मुखर्जी नगर, दिल्ली

प्रयागराज शाखा का पता : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज

Ph.: 8448485517, 8448485519, 87501 87501, 011-47532596

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

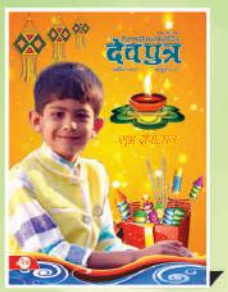

आश्विन २०७६ ▪ वर्ष ४०
अक्टूबर २०१९ ▪ अंक ४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC- SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

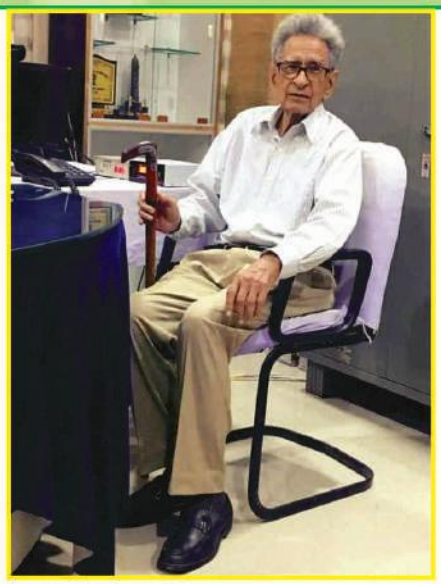

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

इस बार चर्चा देश और समाज के प्रति अपना कर्तव्य निर्वाह करने की। कई बार कुछ अच्छी बातें सैद्धांतिक रूप से उतनी जल्दी समझ नहीं आती जितनी जल्दी अपने आस-पास घूमते जीवंत उदाहरण देखकर आ जाती है। आइए मिलते हैं 'करोड़पति फकीर' से। इनका नाम है श्री घासीराम जी वर्मा। राजस्थान के झुंझुनू जिले के सीगड़ी गाँव के निवासी। बचपन पूरा इतने संघर्षों में बीता कि पढ़ाई का शुल्क भी कभी मित्रों से सहयोग लेकर, कभी माताजी द्वारा घर में बनाए गए घी को बेचकर भरा गया। प्रतिभा तो थी ही इसलिए अमेरिका के एक बड़े विश्वविद्यालय में प्राध्यापक (प्रोफेसर) हो गए। अमेरिका से जब घर आते हैं लाखों रुपया लेकर आते और उसे खर्च कर देते गरीब बेटियों की शिक्षा के लिए। यह धुन ऐसी होती थी कि वापसी का किराया तक मित्र मण्डली चंदा इकट्ठा कर उन्हें वापस भेजती। जानते हैं अब तक अपने जीवन के परिश्रम से कमाए ९ करोड़ रु से अधिक धन वे इन कामों के लिए खर्च कर चुके हैं।

यह सब करते हुए भी वे प्रचार से दूर रहते हैं। राज्यसभा की सदस्यता का प्रस्ताव मिला तो विनम्रता से मना कर दिया। जिले के अधिकारियों ने पद्म सम्मान के लिए आवेदन मांगा तो उससे भी मना कर दिया।

९० वर्ष की अवस्था है किन्तु सेवा निवृत्ति के बाद भी उनकी विद्वत्ता का लाभ लेने के लिए विश्वविद्यालय उन्हे अतिथि व्याख्याता के रूप में आमंत्रित करता है और वर्मा जी अपनी पूरी पूंजी अर्पित करते रहते हैं, राष्ट्र देवता के चरणों में।

आइए, हम सब भी प्रेरणा लें श्री घासीराम जी वर्मा से। बताइए भला हममें से हर कोई बनना नहीं चाहेगा उनके जैसा 'करोड़पति फकीर'?

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

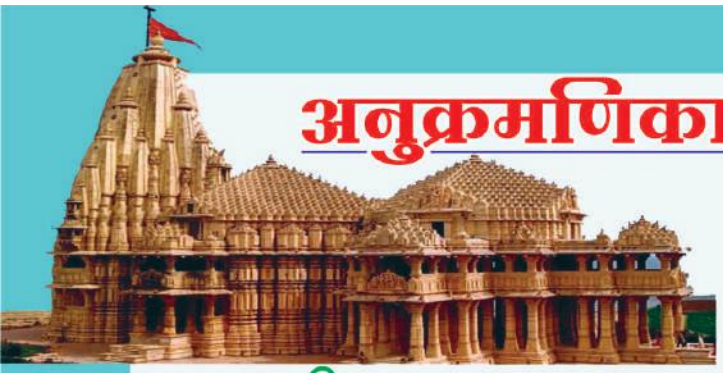

अनुक्रमणिका

कहानी

- जगमगाया दादी का... - राजकुमार धर द्विवेदी ०५
- सामूहिक आतिशबाजी - डॉ. सेवा नन्दवाल ०८
- अनोखा आनंद - पवन पहाड़िया १६
- बात समझ में आई - पवन कुमार वर्मा २४
- ऐसे सुधरी डाक... - शिखरचन्द जैन ३२
- परोपकारी बालक - मधु गोयल ३५

आलेख

- अनूठा सीमोल्लंघन - डॉ. विकास दवे १२

कविता

- विजयदशमी का पर्व - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' ०७
- गाँधी - अश्वनी कुमार पाठक १०
- दारोगा बनना था... - राजनारायण चौधरी ११
- दीवाली का पर्व निराला - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना १४
- गोवर्द्धन पूजा - प्रभुदयाल श्रीवास्तव २९
- चन्द्रयान आता है - पद्मा चौगाँवकर ४७
- चंदामामा दूर नहीं - गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ४७
- घूमें चलो - रमेशचन्द्र पंत ४९

प्रसंग

- सरदार वल्लभ भाई... - डॉ. श्याममनोहर व्यास ३४

जनकारी

- विश्व की सबसे ऊँची...-राजेश गुजर ३८

चित्रकथा

- दशहरे के मेले में - देवांशु वत्स १५
- दूसरा - संकेत गोस्वामी ३१
- काले बादल - देवांशु वत्स ४५
- ऐसे मनाएं दीवाली - संकेत गोस्वामी ४८

बाल प्रस्तुति

- सीख काम आई - प्रखर शर्मा २०
- पहेलिया - नितेश, दिनेश ३६
- बड़े खिलैया - सृष्टि पाण्डेय ३९

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १७
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे १८
- आओ पता करें - २१
- गाथा वीर शिवाजी की - २२
- विषय एक कल्पना अनेक - राजेन्द्र पंजियार, - दीपक, - हरीश निगम २६
- हमारे राज्य वृक्ष : नारियल - डॉ. परशुराम शुक्ल ३०
- यह देश है वीर जवानों का - ३३
- स्वयं बनें वैज्ञानिक -राजीव ताम्बे/सुरेश कुलकर्णी ३७
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी ४०
- पुस्तक परिचय - ४२
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णुप्रसाद चौहान, - सुनील कमार माथुर ४३
- आपकी पाती - ४३
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४४

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें! देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक - **53003592502**
IFSC- SBIN**0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM** " आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

जगमगाया
दादी का घर

कहानी

राजकुमार धर द्विवेदी

रोहित सेना में था। उसकी नई–नई नौकरी थी। वह पहली बार छुट्टी पर गांव आया तो पड़ोस में रहने वाली सुखिया दादी के घर घूमने गया। उसे देखकर दादी अत्यंत खुश हुई और बोली– ''देश प्रेम की भावना से नौकरी करना, रोहित बेटा! तुम्हारे दादा ने बहादुरी से पाकिस्तान के आतंकवादियों का मुकाबला किया था। वे पांच दस आतंकवादियों को मारकर वीरगति को प्राप्त हुए थे। उनके जाने का मुझे बेहद दुःख है, उनके बिना मैं अकेली हो गई, लेकिन इस बात का गर्व है कि मैं एक बहादुर सैनिक की पत्नी हूँ।''

''हाँ दादी। दादाजी मेरे प्रेरणा स्रोत हैं। मैं उन्हीं की तरह देश की सेवा करूँगा।'' यह कहकर रोहित ने पूछा, ''दादी अब तो गाँव में बिजली आ गई है। तुमने अब तक कनेक्शन क्यों नहीं लिया?''

''बेटा! शहर दूर है। मैं कैसे जाऊँ वहाँ कनेक्शन लेने? तबीयत भी ठीक नही रहती। बस लालटेन से गुजारा कर लेती हूँ।'' सुखिया दादी ने कहा।

''अंगद काका ख्याल नहीं रखते तुम्हारा? वे अभी भी नहीं सुधरे?'' रोहित ने पूछा।

''वह कभी नहीं सुधरेगा, नालायक निकल गया। जाकर ससुराल में बस गया है। पिता की पेंशन लेने आता है और मुझसे झगड़ा करता है।'' दादी ने दुखी होकर कहा।

''यह तो बहुत गलत है। दादी, मैं आपके घर में बिजली लगवा दूँगा। दीपावली आने वाली है। तुम्हारे घर में भी रोशनी होनी चाहिए।'' रोहित बोला।

''अरे नहीं, बेटा! रहने दो। मैं ऐसे ही गुजारा कर लूंगी। तुम क्यों तकलीफ उठाओगे?'' दादी बोली।

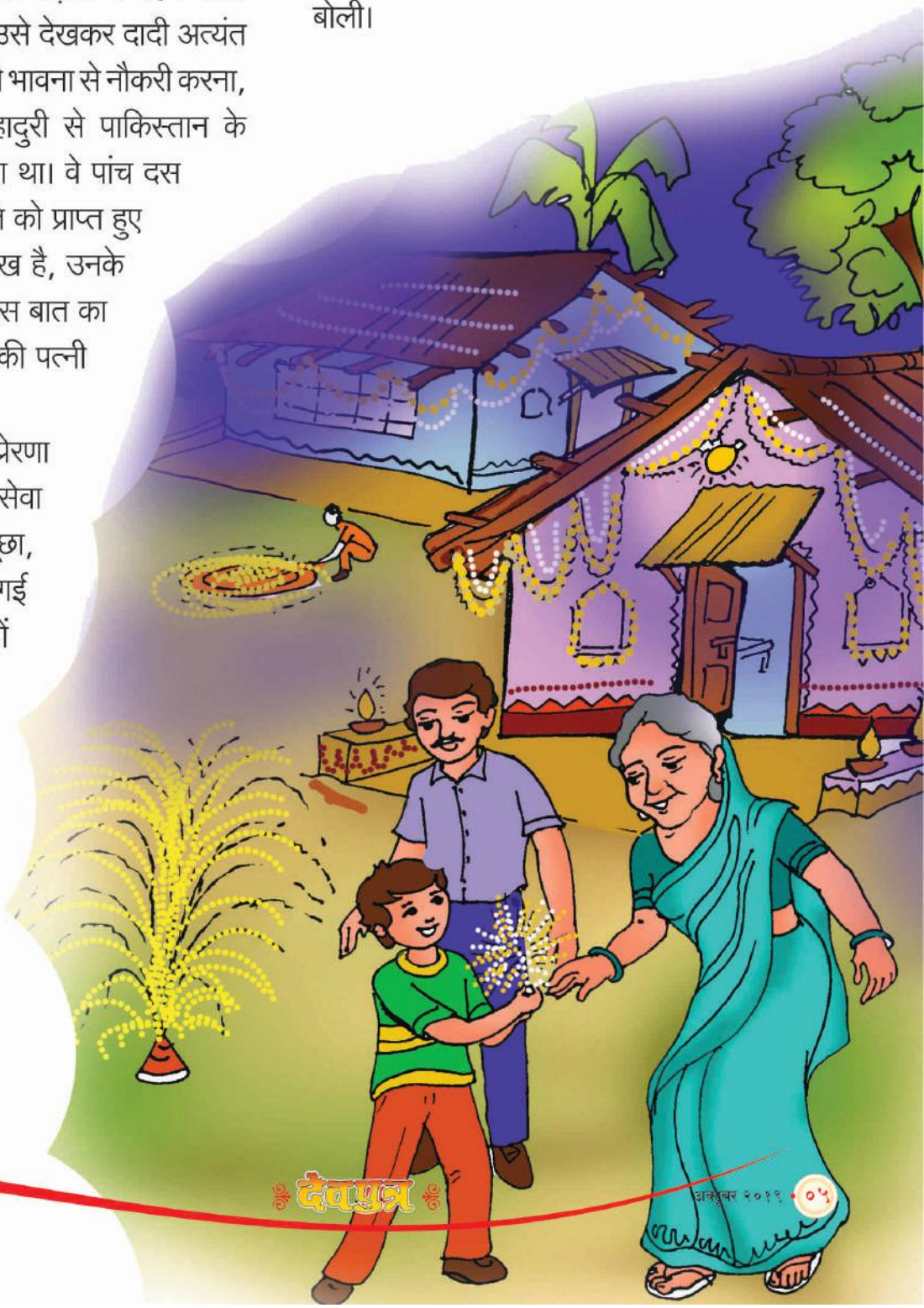

इसमें तकलीफ की क्या बात है दादी? आज सुबह कुछ चित्र देख रहा था। एक चित्र में आपको खुशी से नाचते हुए देखा तो आपके प्रति मन श्रद्धा से भर गया।'' रोहित ने भावुक होकर कहा।

''अरे, कब नाची थी मैं? दादी ने कुछ याद करने की कोशिश करते हुए पूछा।

''जब मेरी नौकरी लगने की खुशी मनाई जा रही थी घर में।'' रोहित ने हंसते हुए कहा।

''अरे हाँ! किसी ने बताया था कि रोहित की फौज में नौकरी लग गई। तुमने फोन करके अपने घर में बताया था न?'' पुरानी यादों से दादी खुशी से चहक उठी।

''हाँ, दादी।'' रोहित बोला।

''वह चित्र मुझे भी तो दिखाना। तुम्हारी माँ के साथ मैं खूब नाची थी।'' दादी बोली।

''जरूर। कल सुबह दिखाऊँगा। अब चलूँ दादी। कल शहर जाऊँगा और जल्दी ही आपके घर में लाइट लगवा दूँगा।'' यह कहकर रोहित चला गया।

अगले दिन सुबह रोहित ने दादी को नाचने वाली तस्वीर दिखाई। दादी तस्वीर देखकर खूब हँसी। इसके बाद रोहित ने उनसे कुछ जरूरी कागजात लिए और बाइक से शहर के लिए प्रस्थान किया। उसने बिजली विभाग के कार्यालय जाकर दादी के घर में बिजली लगवाने का आवेदन दिया।

कुछ दिनों बाद दादी के घर में बिजली लग गई। वह बिजली की रोशनी में रहने लगी। लेकिन सोच रही थी कि बिजली का बिल कैसे जमा करेगी?

उसके पास तो पैसे रहते नहीं। यह बात उसने रोहित से कही।

''इसकी चिंता तुम मत करो, दादी। जैसे मेरे घर का बिल जमा होगा, वैसे तुम्हारा भी हो जाएगा। मैंने माँ और पिताजी से बात कर ली हैं। पिताजी आपका भी बिल जमा कर देंगे।'' रोहित ने कहा।

''अरे बेटा! क्यों घरवालों पर बोझ डाल रहे हो? मुझे खराब लग रहा है।'' सुखिया दादी बोली।

''दादी! किसी पर कोई बोझ नहीं आएगा। मेरे माता-पिता खुश है कि मैंने आपके बारे में सोचा।'' रोहित ने बताया।

यह सुनकर दादी का मन हल्का हो गया।

कुछ दिनों बाद दीपावली आ गई। धनतेरस के दिन ही रोहित ने अपने घर के साथ ही सुखिया दादी के घर में भी झालरें लगा दीं। उसका घर जगमगाने लगा। दीपावली की रात तो दादी के घर में खूब रोशनी हुई। बिजली के उजाले में उसने लक्ष्मी और गणेश की पूजा की। रोहित और उसके भतीजे अंशू ने खूब फटाके फोड़े।

''लो दादी! आप भी पटाके फोड़ो।'' अंशु ने हँसते हुए कहा।

''हाँ-हाँ दादी फोड़ो।'' रोहित ने भी खिलखिलाते हुए कहा।

''अरे नहीं, बेटा! मुझे डर लगता है।'' यह कहकर दादी दूर भागी तो सब हँसने लगे।

कुछ दिनों बाद सुखिया दादी के बेटे अंगद को यह सब मालूम हुआ तो वह अत्यंत लज्जित हुआ। उसने अपनी पत्नी से कहा, ''चलो अब घर में रहेंगे ओर माता की सेवा करेंगे। जब गैर होकर रोहित ने मेरी माँ के लिए इतना किया तो मैं अपना कर्तव्य क्यों न निभाऊँ? माँ कष्ट सहे, यह ठीक नहीं।''

अंगद की पत्नी भी मान गई।

जल्दी ही अंगद और उसकी पत्नी घर आ गए। अंगद ने माँ से कहा, ''माँ! मुझे क्षमा कर दो। मुझसे बड़ी भूल हुई, लेकिन अब मैं घर में ही रहूँगा और तुम्हारी सेवा करूँगा। रोहित के सेवा कार्य ने मेरी आँखें खोल दीं।''

यह सुनकर माँ को सुखद आश्चर्य हुआ। उसने आगे बढ़कर बेटे को गले लगा लिया।

अब अंगद माँ की पूरी देखभाल करने लगा। उसकी पत्नी भी सास की खूब सेवा करती थी।

● **रायपुर (छ.ग.)**

विजयदशमी का पर्व

कविता

सुधा गुप्ता 'अमृता'

गाँव शहर हर डगर सजी है
नौ दुर्गा सज बैठ गई हैं
विजयादशमी पर्व दशहरा
जीवन का सिखलाये ककहरा

शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी माता
चंद्रघंटा, कुष्मांडा माता।
स्कन्द माता, कात्यायिनी देवी
कालरात्रि माँ गौरी देवी।
सिद्धिदात्री सब सिद्धि देतीं
सब कुछ देतीं कुछ ना लेतीं।
नौ देवी की अकथ कहानी
जो पूजे सो होवे ज्ञानी।।

नवरात्रि के नौ दिन न्यारे
कन्या भोजन हों भंडारे।
दसवें दिन होता है दशहरा
विजयादशमी पर्व सुनहरा।।

दस सिर वाला महाबली था
अत्याचारी महाछली था।
उसने सीता हरण किया था
बुरे कर्म का वरण किया था।।

नौ दुर्गा नव शक्ति बनकर
समा गई तब राम के अन्दर।
रथ आरूढ़ हुआ तब रावण
राम संग मिल गया विभीषण।।

सन सन चलते राम के बाण
पल पल राक्षस खोते प्राण
मेघनाथ का बल ना ठहरा
महाकाली का रण में पहरा।।

हुआ राम रावण संग्राम
जीत गये फिर राजाराम।

बुराई की हुई पराजय
अच्छाई की हुई विजय।।
बुरे कर्म जो भी करता है
वह रावण सा ही जलता है।
अच्छे जो भी करता काम
प्रभु इसको देता ईनाम।।

दुर्गा पूजा नारी पूजा है
इसके जैसा ना दूजा है
ममता करूणा का जल गहरा
महाशक्ति का परचम फहरा।

• कटनी (म.प्र.)

सामूहिक आतिशबाजी

कहानी

डॉ. सेवा नन्दवाल

रत्ना दीदी कक्षा में आई और अभिवादन के आदान प्रदान के पश्चात बोलने लगी– ''मैं देख रही हूं तुम लोग अभी से दीपावली के रंग में रंग गए हो। सबके चेहरे पर खुशियों की फुलझड़ी जलती दिखाई दे रही है। ''होना भी चाहिए दीदी, क्योंकि यह हमारा सबसे बड़ा त्योहार है जिसकी प्रतीक्षा हम साल भर करते हैं।'' –निकेता ने मुस्कराते हुए स्वीकार किया।

''अवश्य होना चाहिए लेकिन बच्चों ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि यह त्योहार 'अपना मजा एवं बाकी को सजा' बनकर रह जाए'– रत्ना दीदी ने आग्रह किया। ''क्या मतलब दीदी?''–श्वेता समझ नहीं पाई। ''देखो बच्चों मैं तो यही सलाह दूंगी कि पूरे पर्व के दौरान पर्यावरण सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाए याने इको फ्रेंडली या पर्यावरण हितैषी दीपावली मनाई जाए। यह समय की मांग भी है''– रत्ना ने स्पष्ट किया। ''जी हाँ दीदी हम भी यही चाहते हैं कि हमारे मनाने के तरीके से पर्यावरण को क्षति न पहुंचे इसलिए आप थोड़ा मार्गदर्शन कर देंगे तो बेहतर होगा।''– सोमेश ने अनुरोध किया। ''अवश्य, देखो बच्चों जहाँ तक हो सके पटाखे कम मात्रा में जलाएं और बड़े पटाखे न जलाएं। सामूहिक आतिशबाजी कार्यक्रम का हिस्सा बनने की कोशिश करें। तेज ध्वनि वाले पटाखे से बचें क्योंकि उससे छोटे बच्चों, बीमारों, वरिष्ठजनों और मूक पशुओं को बहुत तकलीफ होती है''–रत्ना दीदी ने समझाया।

''हाँ दीदी एक गली या मोहल्ले में रहने वाले सारे बच्चे सामूहिक आतिशबाजी का हिस्सा बन सकते हैं। हम इस बार ऐसा करेंगे– शालिनी बोली। ''विद्युत सजावट कम करें क्योंकि विद्युत उत्पादन में भारी मात्रा में कोयला जाता है जिससे कार्बन डाइऑक्साईट उत्सर्जित होती है। अच्छा हो कृत्रिम रोशनी की जगह मिट्टी के दीयों

का उपयोग किया जाए जो देखने में भी सुदंर, सुखद तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखने में सहायक होते हैं''– रत्ना दीदी ने समझईश दी। ''आप कहती हैं तो इस बार हम विद्युत सीरिज का उपयोग नहीं करेंगे''– बबलू ने आश्वस्त किया।

''सजावट के लिए प्लास्टिक की सामग्री के बजाय प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग हो। विभिन्न प्रकार के फूल,पौधों तथा पत्तियों के अलावा बांस, जूट तथा नरियल के खोले जैसी चीजों का इस्तेमाल किया जाए''– रत्ना ने सलाह दी। ''जी दीदी इस बार हम फूल–पत्तियों और रंगोली से घर सजाएंगे''– पलक ने स्वीकार किया।

''दीवाली आने पर तुम्हें खुशी होती है ना?''– रत्ना दीदी ने पूछा। ''यह भी कोई पूछने की बात है। हमारे खिले हुए चेहरों को देख सकती हैं''– आदित्य ने कहा। ''एक कड़व सत्य बताऊं... पता है हमारे देश में लाखों परिवार ऐसे हैं जिनके दिल में दीवाली की दस्तक भय पैदा करती है। मालूम हैं क्यों? क्योंकि उनके पास पैसे नहीं होते। उन्हें डर लगता है कि वे अपने बच्चों की फरमाइशें पूरी नहीं कर पाने के कारण उनसे आँखें नहीं मिला पाएंगे''– रत्ना ने भावुक स्वर में कहा। इसमें दीदी हम क्या कर सकते हैं?''– झिझकते हुए रुचि ने पूछ लिया।

''हम खूब मिठाई बनाएं–खाएं लेकिन एक हिस्सा उन झुग्गीवासी बच्चों को भी वितरित करें जिनके मुंह मीठा होने से वंचित रह जाते हैं। हम खूब नए पकड़े सिलावाएं लेकिन उन नंग–धड़ंग बच्चों की तस्वीर भी मन में रखो जिनके तन पर वस्त्र नहीं होते। उनके तन ढंकने का प्रयास अवश्य करें''–रत्ना दीदी ने सलाह दी।

''ठीक है दीदी हम पूरी कोशिश करेंगे।''

''और हाँ, इस दिन एक पौधा अवश्य रोपें ओर उसकी परवरिश की जिम्मेदारी भी वहन करें। आपका यह योगदान पर्यावरण संरक्षण के लिए मील का पत्थर और अनुकरणीय साबित हो सकता है''– रत्ना दीदी ने बताया''

ठीक है दीदी हम उस दिन एक पौधा अवश्य लगाएंगे और अगले दिन आपको बातएंगे भी ताकि आप समय–समय पर पूछती रहें'' –पंकज ने कहा।

''आपके मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद दीदी!''– शालिनी ने सबकी ओर से आभार व्यक्त किया।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

।। गांधी जयंती : २ अक्टोबर ।।

गांधी

कविता

अश्वनी कुमार पाठक

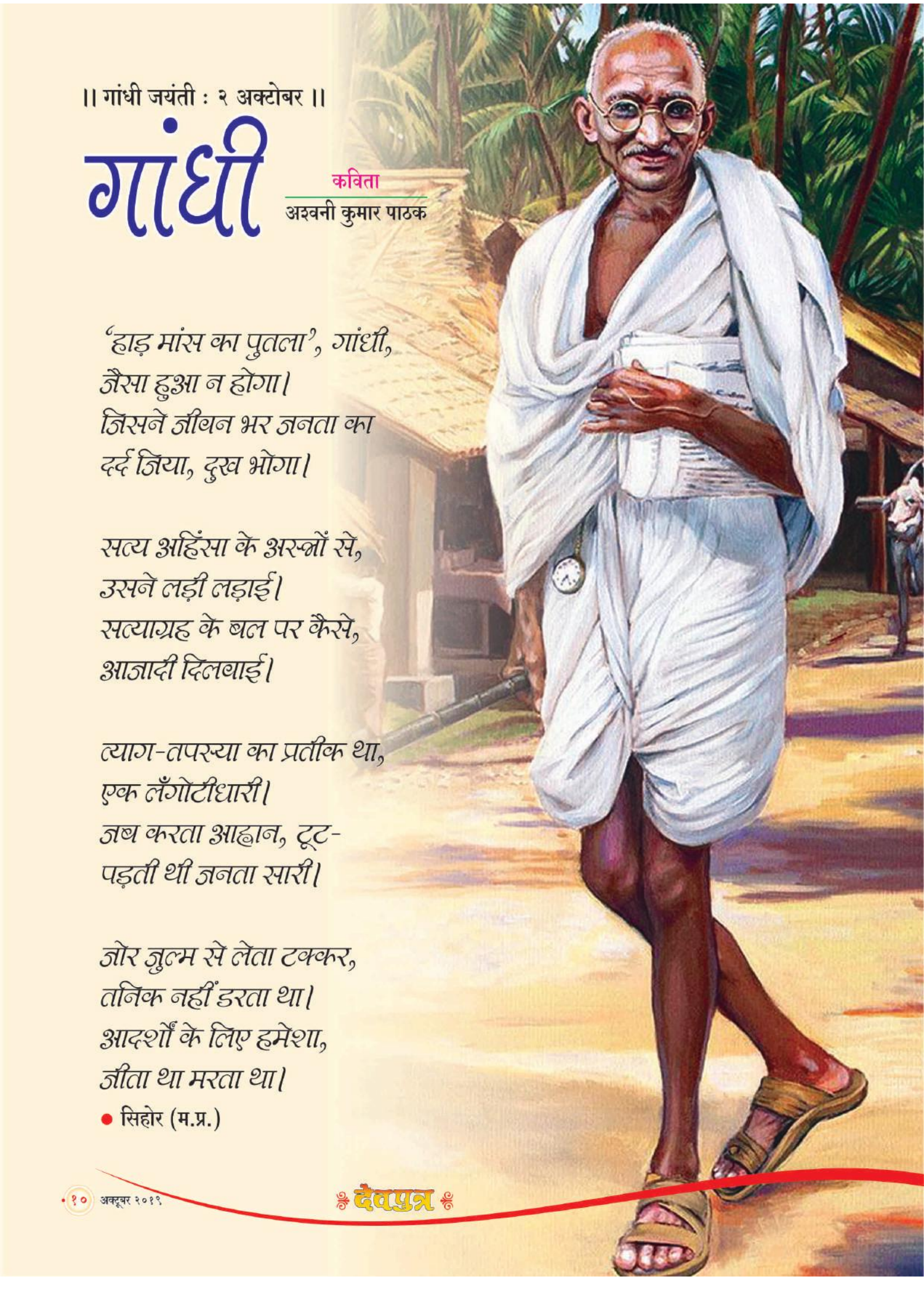

'हाड़ मांस का पुतला', गांधी,
जैसा हुआ न होगा।
जिसने जीवन भर जनता का
दर्द जिया, दुख भोगा।

सत्य अहिंसा के अस्त्रों से,
उसने लड़ी लड़ाई।
सत्याग्रह के बल पर कैसे,
आजादी दिलवाई।

त्याग-तपस्या का प्रतीक था,
एक लँगोटीधारी।
जब करता आह्वान, टूट-
पड़ती थी जनता सारी।

जोर जुल्म से लेता टक्कर,
तनिक नहीं डरता था।
आदर्शों के लिए हमेशा,
जीता था मरता था।

● सिहोर (म.प्र.)

दारोगा बनना था मुश्किल

कविता

राजनारायण चौधरी

लाल बहादुर ठिगने थे, पर
थे विचार के ऊँचे।
इसीलिए तो वे प्रधान-
मंत्री पद पर जा पहुँचे।।

एक मित्र उनका था कभी
किसी दिन सम्मुख आया।
अपना एक काम करने को
उसने उन्हें सुनाया।।

"मेरा एक पुत्र है जो
पा जाए दारोगा पद।
आधा इंच मगर ऊँचाई
में कम है उसका कद।।"

"अगर सिफारिश करें आप
तो काम सफल हो जाए।
मेरा बेटा जीवन भर गुण
सदा आपके गाए।"

कह उन्होंने "मित्र, आपका
काम न हो सकता यह।
होगा वही न काम नियम-
कायदा रहा हो जो कह।"

हो नाराज बहुत उनका था
मित्र बात यह बोला-
"व्यर्थ आपके सम्मुख आ
मैंने अपना मुँह खोला।।"

अगर आप इतने ठिगने हो
ऐसे पद पर आए-
क्यों न भला मेरा बेटा
दारोगा का पद पाए?"

बोले शास्त्री जी - "कहना
है सही आपका बिल्कुल।
मैं इस पद पर हूँ, पर
दारोगा बनना था मुश्किल।।"

• हाजीपुर (बिहार)

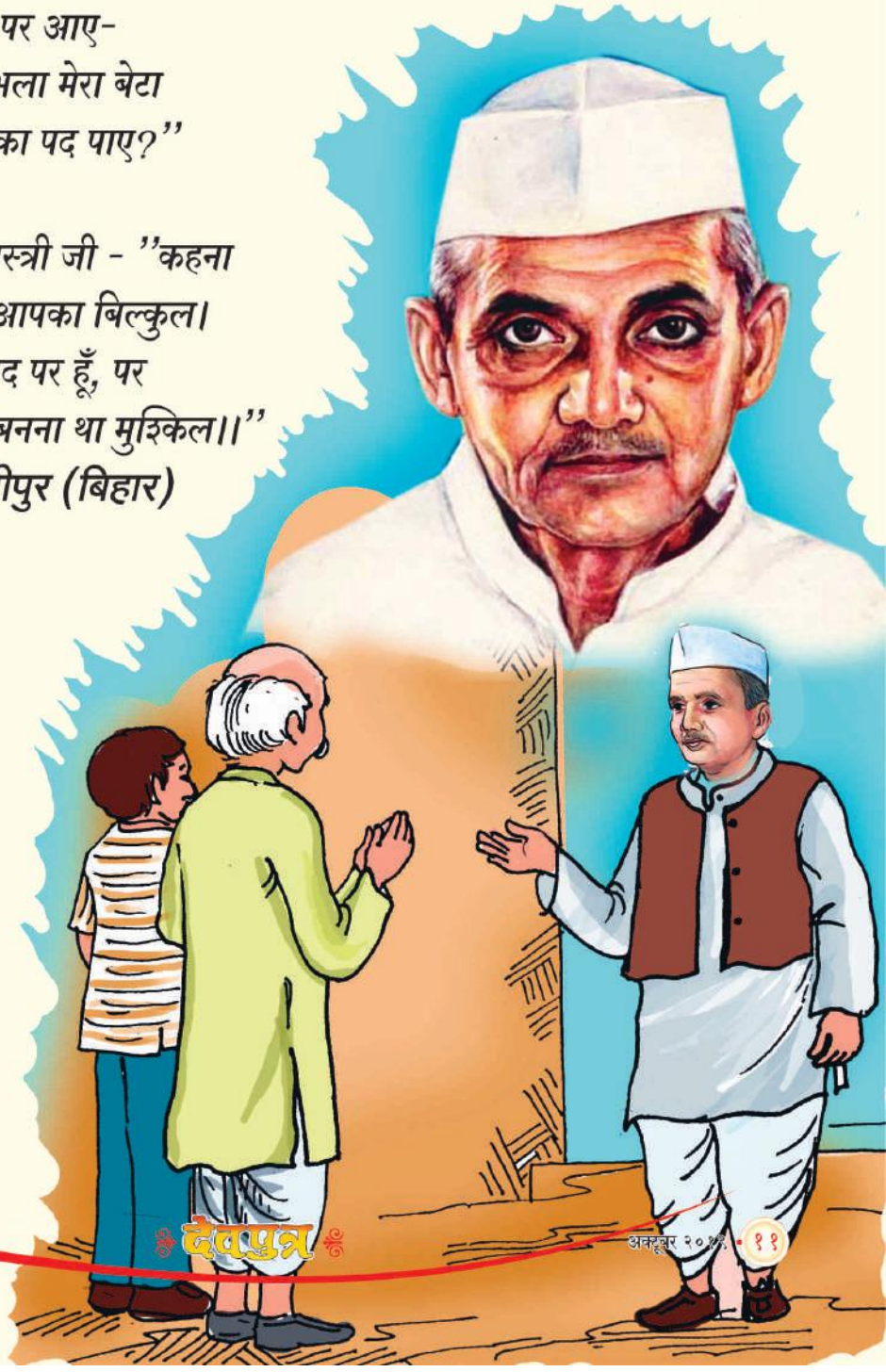

|| आजाद हिन्द सरकार का हीरक जयंती वर्ष : २१ अक्टूबर ||

सीमा पार बनायी सरकार : अनूठा सीमोल्लंघन

आलेख

डॉ. विकास दवे

प्रिय बच्चो! विजयादशमी पर्व पर शस्त्र सुसज्जित होकर सीमोल्लंघन की परम्परा आज भी प्रचलित है। त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्र जी ने वानर सेना सहित लंका में जाकर रावण को परास्त किया था। हर बार दशहरा तो न था। पर आधुनिक युग में भी हमारी सशस्त्र सेना ने एक बार थल मार्ग और एक बार वायुमार्ग से पाकिस्तान को सबक सिखाने सीमोल्लंघन किया जिससे हम 'सर्जिकल स्ट्राईक', 'एयर स्ट्राईक' के नाम से परिचित हैं। इतिहास में सीमोल्लंघन की कई घटनाएं हैं लेकिन एक सीमोल्लंघन ऐसा भी हुआ जिसमें शत्रु (अंग्रेज) हमारे देश में था और उससे लड़ने सीमा पार जाकर एक सेना बनाई गयी नाम था 'आजाद हिन्द फौज'। सेना बनाई तो महान क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बसु (बोस) ने थी पर लड़ाई नेताजी सुभाषचन्द्र बसु (बोस) ने लड़ी थी। ४ जुलाई १९४३ को रासबिहारी जी ने इस फौज की कमान सुभाष बाबू को सौंप दी थी। सिंगापुर के केथे भवन सिनेमाघर में १० हजार देशभक्तों के बीच यह उत्तरदायित्व स्वयं रासबिहारी जी ने उन्हें सौंपा। सुभाष सेनापति बनकर सेना को सुदृढ़ करने में जुट गए। फिर क्या हुआ आगे पढिए डॉ. विकास दवे के शब्दों में-

आजाद हिन्द फौज के सशक्तिकरण के पश्चात एक बड़ी चुनौती सुभाष बाबू को यह लग रही थी कि भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाली इस सेना को संरक्षण देने वाला कोई शासकीय तंत्र उनके पास नहीं था। विदेशी सरकारें सहयोग तो कर सकती थी लेकिन वह सहयोग केवल शस्त्र और धन का हो सकता था। आत्मविश्वास से परिपूर्ण कोई सेना यह अनुभव करे कि उसकी पीठ पर किसी देश की सरकार का भी हाथ है यह अपने आप में एक बड़ा मनोवैज्ञानिक संबल हो सकता था। इसी बात को ध्यान में रखकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने २१ अक्टूबर १९४३ को आजाद हिंद सरकार की स्थापना का संकल्प लेकर उसे मूर्त रूप दे दिया। सिंगापुर का कैथे सभागृह एक बार फिर से दुल्हन की तरह सजा हुआ दिखाई दे रहा था। हजारों की संख्या में जन समूह सुभाष बाबू के द्वारा घोषित की जाने वाली सरकार की प्रतीक्षा कर रहे थे। सबसे पहले रासबिहारी बोस खड़े हुए और उन्होंने सुभाष बाबू का परिचय कराते हुए आजाद हिंद सरकार की आवश्यकता के संदर्भ में अपनी बात रखी। उन्होंने भावुक होकर कहा– ''पिछले २० वर्षों से मैं अपनी माँ की गोद से दूर हूँ। कितनी बार भारत माँ ने हाथ बढ़ा कर मुझ जैसे जिद्दी शिशु को अपनी गोद में घसीटना चाहा पर मेरी माँ के हाथ बढ़ नहीं सके क्योंकि उसके हाथों में तो हथकड़ियां जकड़ी हुई थीं। आज मेरा दूसरा भाई सुभाष इस काम को पूरा करने के लिए आया है। वह मुझसे उम्र में छोटा है। पर उसके हौंसले मुझसे आगे और मुझसे अधिक है। वह मसीहा बनकर इंसानियत के घावों पर आजादी के फोहे रखकर उन्हें ठीक करने आया है। हम तीस लाख नंगे भूखे अप्रवासी भारतीय आज आजादी के इस पैगम्बर का हृदय से स्वागत करते हैं।''

श्री रासबिहारी बोस के इस भावुक उद्‌बोधन के बाद सब की निगाहें सुभाष बाबू पर टिकी हुई थीं। सुभाष बाबू ने अत्यंत सधे हुए स्वर में बोलना प्रारंभ किया– ''इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते और विशेष करके २२वर्ष से भारत में स्वतंत्रता संग्राम के साथ साथ सार्वजनिक जीवन में भाग लेते हुए मुझे इस बात की कमी सदैव खलती रहती थी कि भारत की आजादी का आंदोलन केवल इसलिए यशस्वी नहीं हो पा रहा क्योंकि यह असंगठित ढंग से क्रांतिकारियों के द्वारा लड़ा जा रहा

है। यदि इस पूरी शक्ति को सैनिक संगठन में परिवर्तत कर दिया जाए और व्यवस्थित सेना बना कर सशस्त्र संघर्ष करके ब्रिटिश सेना से लड़ाई लड़ी जाए तो भारत को और भी जल्दी स्वतंत्र कराया जा सकता है। किन्तु केवल सेना के बन जाने से ही स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होना चाहिए और यही बात ध्यान में रखते हुए मैंने अपने मित्रों के साथ विचार–विमर्श करके इस आजाद हिंद सरकार को स्थाई सरकार के रूप में गठन करने का फैसला किया है। प्रसन्नता की बात यह है कि पूर्व एशिया और दक्षिण एशिया के अनेक राष्ट्र इस सरकार और सेना को मान्यता देने के लिए हमारे आज के शपथ समारोह में उपस्थित हुए हैं। आज हम सब आजाद हिंद सरकार के घोषणा पत्र को प्रस्तुत करेंगे ही, साथ ही अपने मंत्रियों के साथ भारत की इस सरकार के सभी प्रकार के फैसलों पर निर्णय लेने के लिए अपनी प्रतिबद्धता भी व्यक्त करेंगे। अभी प्रारंभ में हमने मंत्रालय तो कई बनाए हैं किन्तु इस बात की सावधानी रखी है कि इस समय सरकार के केवल वहीं मंत्रालय सक्रिय रहेंगे जो युद्ध काल में सेना को सहयोग देते हैं, शेष सभी विभागों के मंत्री भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने हेतु अपने–अपने विभागों के काम को सुचारू रूप से चलाने का काम करेंगे। कुछ लोगों को यह भी लग सकता है कि इस मंत्रीमंडल में सेना के प्रतिनिधियों को अधिक स्थान दिया गया है, किन्तु यह इसलिए भी आवश्यक हो गया था क्योंकि वर्तमान में सेना ही सबसे सक्रिय इकाई के रूप में अंग्रेजों से युद्ध लड़ रही है। सरकार और सैनिकों के बीच समन्वय ठीक प्रकार से बना रहे इसलिए सरकार में सैन्य अधिकारियों का प्रतिनिधित्व अधिक मात्रा में रखा गया है। आप विश्वास रखें हम में से प्रत्येक व्यक्ति केवल और केवल माँ भारती की स्वतंत्रता का दृढ़ संकल्प लेकर ही अपने अपने कामों को सम्पन्न कर रहा है।''

पूरा सभागृह तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज रहा था। नेताजी सुभाष पर यह पूरे जनसमूह के विश्वास की अभिव्यक्ति थी। इसके पश्चात् शपथ ग्रहण समारोह प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने शपथ ग्रहण की। उन्होंने बोलना प्रारंभ किया– ''ईश्वर की साक्षी करके मैं सुभाष चंद्र बोस यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि भारत को स्वाधीन करने के लिए और अपने ३८ करोड़ देशवासियों को स्वाधीन करने के लिए अपने जीवन की अंतिम सांस तक आजादी का पावन युद्ध लड़ता रहूँगा।''

यह वाक्य पूरा करते–करते भावुकता की अधिकता के कारण सुभाष बाबू का गला रुँध गया था।उनकी आँखें माँ भारती की स्वतंत्रता की कल्पना करके ही भीग गई थीं। आँखों के किनारों से आँसुओं की कुछ बूंदें स्वतः छलक पड़ीं। उनके इस भावुक रूप को देखकर पूरे सभागृह में उपस्थित बहनें सिसकियां लेने लगी थी। किंतु सब यह जानते थे कि भावुकता का समय नहीं है। साहस के साथ उन्होंने अपने आपको काबू में करते हुए फिर से पढ़ना प्रारंभ किया, ''मैं सदैव ही भारत का सेवक रहूँगा और अपने ३८ करोड़ भाई बहनों के शुभ चिंतन को अपना कर्तव्य समझूंगा। आजादी अर्जित कर लेने के पश्चात भी भारत की आजादी की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहूंगा।''

● **इन्दौर (म.प्र.)**

दीवाली का पर्व निराला। पाँच दिनों की खुशियों वाला।।

पहले दिन होती धन तेरस, खूब खरीदे जाते बरतन।
धन्वन्तरि वैद्य की पूजा, करके, मिलता है निरोग तन।
बाज़ारों में होती रौनक, दुकानों पर बैठे लाला।।

अगले दिन छोटी दिवाली, कहलाती है, नर्क चतुर्दश।
बाल कृष्ण ने इस दिन मारा, नरकासुर सा महाराक्षस।
साफ सफाई करें, शाम को नाली पर हो दीप-उजाला।।

दिवस तीसरे दीपमालिका, है लक्ष्मी गणेश का पूजन।
दीप खुशी के, मेल-जोल को खूब जलाएँ द्वारे-आँगन।
खील-खिलौने और मिठाई, अर्पित कर फूलों की माला।।

चौथे दिन गोवर्द्धन पूजा, कान्हा ने ब्रज की रक्षा कर।
किया स्वयं देवत्व प्रतिष्ठित, खुशी मनाते सब नारी-नर।
लोक-पर्व अद्भुत यह भाई, अन्नकूट-त्यौहार निराला।।

भैया दूज पाँचवे दिन है, बहिना घर जो खाते खाना।
मोक्ष सदा उनको मिलता है, पड़ता नहीं नर्क है जाना।
बहिनें भाई को टीका कर, देतीं मधुर प्रसाद निराला।।

दीवाली का पर्व निराला

कविता

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
• हरदोई (उ.प्र.)

दशहरे के मेले में...

चित्रकथा : देवांशु वत्स

अनोखा आनंद

कहानी

पवन पहाड़िया

रमेश, दिनेश, सुरेश और महावीर चारों साथी चौक में खड़े काफी देर से पारस का इंतजार कर रहे थे। काफी देर के बाद भी जब वह नहीं आया तो सभी मित्र उस के घर की तरफ ही रवाना हो गए। घर पहुँचने पर पता चला कि पारस तो यहाँ से कभी का जा चुका है।

सभी साथी आश्चर्य कर रहे थे। हमें छोड़ कर वह गया तो गया किधर!

इतने में महावीर बोला– ''चलो! रावण चौक ही चलते हैं शायद वह अकेला ही वहाँ चला गया होगा। महावीर की बात पर सभी साथी रावण चौक की तरफ रवाना हो गए। चलते–चलते रास्ते भर की रोशनी व रौनक भी देखते जा रहे थे तथा बातों की मस्ती भी मारते जा रहे थे।

सहसा सुरेश चिल्लाया– ''अरे वह देखो। वह रहा पारस सामने वाले चबूतरे पर, पर उस के चारों तरफ बच्चों की यह भीड़ कैसी है।

सभी ने उधर देखा। वास्तव में पारस चारों तरफ से बच्चों से घिरा खड़ा था। सभी उधर लपके। वे आश्चर्यचकित से पारस को देखने लगे वह भीड़ के बीच में खड़ा था और बारी बारी से प्रश्न पूछ रहा था। कभी चालीस और तीस कितने तो कभी साठ में से सैंतालीस गए तो कितने, तो कभी कुछ पूछ रहा था। जो सही बताता उनको वह फटाके और मिठाईयां देता जा रहा था। जब यह खेल खत्म हुआ और भीड़ छट गई तो पास ने अपनी मित्र मंडली को सामने खड़ी देखकर पलकें झुका ली। वे कुछ कहे इससे पहले ही वह बोल पड़ा– ''क्षमा करना साथियो! मैं रावण चौक नहीं जा सकूंगा अतः वापिस घर जा रहा हूँ।''

सभी साथी आँखें फाड़े उसे देखे जा रहे थे। उनके चेहरों पर आश्चर्य था। आखिर पारस ही बोला– यूँ आप इस प्रकार मुझे क्यों घूरे जा रहे हैं। क्या मैं आप को पागल नजर आ रहा हूँ या फिर मुझे आज ही देखा है? कुछ बोलो तो सही।''

''अभी तुम यह क्या जादू चला रहे थे यहाँ? सभी साथी एक साथ बोल पड़े। यह इतनी भीड़ किस लिए थी ओर तुम्हारा इस प्रकार पटाखे और मिठाइयां बांटना। यह सब हम क्या देख रहे हैं?''

एक लम्बी सांस खींचते हुए पारस बोला ''आप इसे नहीं समझ सकते हैं। हमारे घर वाले तो सभी साधनों से सम्पन्न है। हम जो भी चीज चाहते है वे मांगते ही दिला देते हैं। पर कभी आपने यह सोचा कि हमारे ही ऐसे कितने ही साथी है जो हर एक चीज के लिए हमारा मुँह ताकते हैं जबकि हम रुपए आतिशबाजी में बर्बाद कर देते हैं। ये हमारा मुँह ताके यह मुझे गंवारा नहीं है। इन के घर वाले बड़ी मुश्किल से दो जून की रोटी की जुगत बैठा पाते है फिर इन की मांग

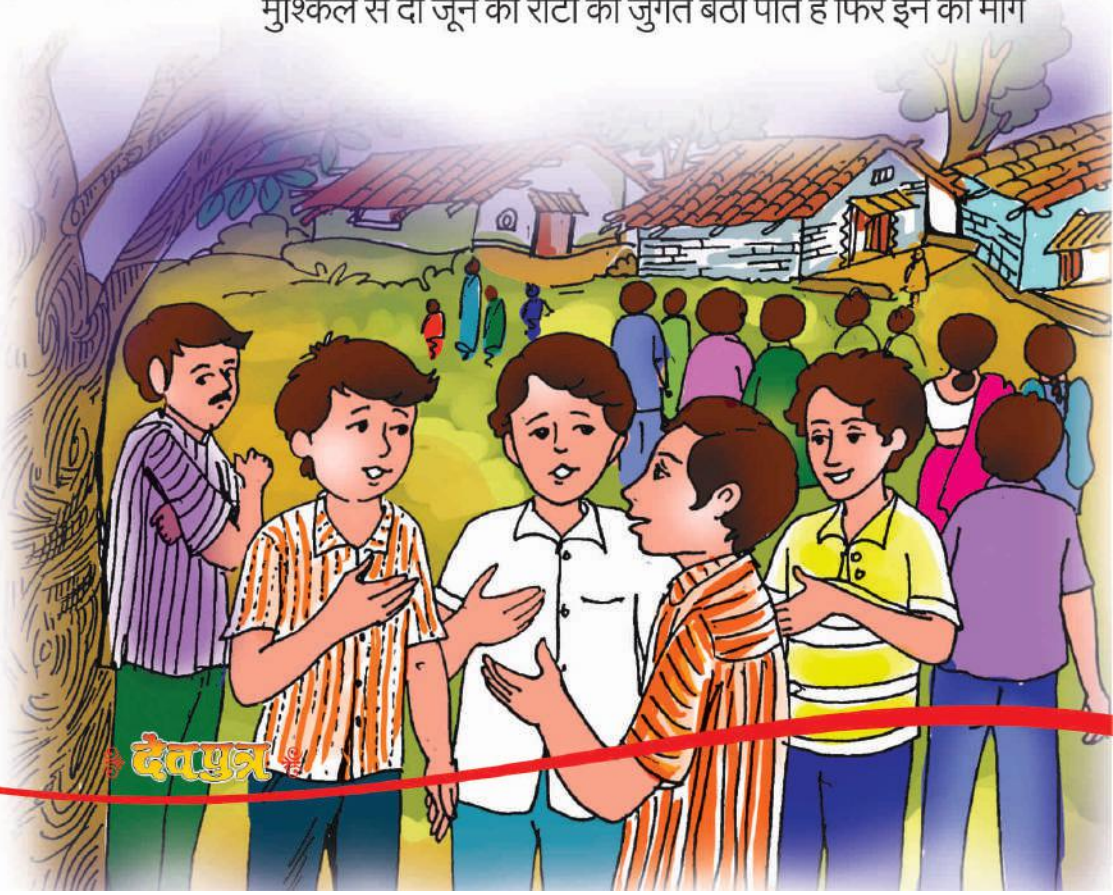

वे कैसी पूरी कर सकते हैं अब इस में हमारे इन साथियों का क्या दोष?''

''तो तुम अभी यह खेल की तरह क्या कर रहे थे? इस से इनको क्या लेना देना था?''

''आप सभी नहीं समझोगे यह बात? ये जितने गरीब लोग हैं भाग्य से गरीब जरूर है पर सम्मान से नहीं। स्वाभिमान दांव पर लगाना इन को पसंद नहीं है। यदि यही सब कुछ अगर मैं इन की गरीबी पर तरस खा कर इनको देता तो ये शायद ही लेते जबकि इस खेल से इन की आवश्यकता की पूर्ति भी हो गई ओर मेरी दृष्टि में दो फायदे भी।''

''वे कौन-कौन से?'' दिनेश, रमेश और महावीर ने एक साथ पूछा।

''एक तो यह कि इन सभी के मन में यह विचार नहीं आ सकेगा कि हम किसी की दया पर यह त्योहार मना रहे हैं और दूसरा यह कि इस प्रकार के खेल से इनकी रुचि पढ़ने के प्रति जागेगी ओर बुद्धि से काम लेना भी सीखेंगे जिस से गलियों में भटकने के बजाय सभ्य नागरिक बनने की सम्भावना बढ़ेगी।'' पारस ने समझाया।

''सभी साथी अवाक्! उन्होंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि पारस इतना उदार और जरूरतमंदों के आगे यह खेल और करें। यह लो हम सब की मिठाइयां और अतिशबाजी। हमें अब ये मिठाइयां और सारी आतिशबाजी उन बच्चों में बांटनी है जिनके घर वाले सक्षम नहीं है।

पारस ने हंसते हुए कहा-''चलो!आखिर मित्र तो मेरे ही हो मेरे जैसे नहीं हुए तो कैसी मित्रता।''

सभी पारस के पीछे-पीछे हंसते हुए चल रहे थे एक अनोखे ही आनन्द में डूबे हुए।

● डेह (राज.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- पुत्रेष्टि यज्ञ के बाद महाराज दशरथ के चार पुत्र हुए। उनमें से दो पुत्रों की जननी कौन थीं?
- महा तेजस्वी द्रौपदी के पिता कौन थे तथा वे कहाँ के राजा थे?
- यूरोप के एक नगर बोलेग्ना के प्रमुख चौराहे पर त्रिशूलधारी भगवान शिव की प्रतिमा लगी है। यह नगर किस देश में है?
- अपने देश में सभी पशु-पक्षी किसी न किसी देवता के वाहन हैं, मोर किनका वाहन है?
- देवी के कितने शक्तिपीठ इस समय भारत के बाहर अन्य देशों में हैं?
- शिवाजी महाराज किनके पुत्र थे?
- हवाई जहाज बनाने, उड़ाने से सम्बन्धित 'व्योमयानार्क प्रकाश' नाम का ग्रंथ किसने लिखा है?
- जिस घोड़े पर महारानी लक्ष्मीबाई ने झांसी से कालपी तक की सौ मील की यात्रा एक रात में पूरी की, उसका नाम क्या था?
- भरतपुर के पराक्रमी नरेश महाराज सूरजमल के डर से कौन सा हमलावर पानीपत से ही वापस लौट गया?
- नवम्बर माह में पद्मश्री से अलकृंत राजस्थान के किन प्रसिद्ध संत का देवलोकगनम हुआ है?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

देश और राजधानी

आलेख
श्रीधर बर्वे

हैं जिनकी एक से अधिक राजधानियाँ हैं। कुछ देशों की राजधानी और उनके नाम हमें अटपटे और विचित्र लग सकते हैं, यद्यपि यह विचित्रता या अटपटापन हमारे लिए हो सकता है स्वयं सम्बन्धित देश की भाषा में वे नाम सामान्य हो सकते हैं और उनका कुछ अर्थ भी होता है।

किसी कारण से जब किसी देश का नाम सुनते हैं तो सबसे पहले हमें उसकी भौगोलिक स्थिति के बाद उसकी राजधानी क्या है, कहाँ है इसकी ओर ध्यान जाता है। प्रसिद्ध, परिचित और चर्चित देशों की राजधानियों के नाम बार-बार उल्लेख होने के कारण सामन्यतया याद हो जाते हैं।

राजधानियों के नाम रखने के लिए हम कुछ और तरीके हो सकते हैं। ऐसे भी देश हैं जिनकी राजधानियों और स्वयं के नाम एक समान हैं, कुछ ऐसे भी देश हैं जिनकी राजधानियों के नाम और स्वयं देश के नाम में मामूली सा अन्तर है। कुछ ऐसे भी देश

एक समान नाम के देश और राजधानी -

देश	राजधानी	स्थिति
जिबूटी	जिबूटी	उत्तरी अफ्रीका
साओटोम एंड प्रिंसिप	साओटोम एंड प्रिंसिप	पश्चिम अफ्रीका
मोनाको	मोनाको	योरोप (फ्रांस)
सैन मैरिनो	सैन मैरिनो	योरोप (इटली)
वेटिकन	वेटिकन	योरोप
लक्समबर्ग	लक्समबर्ग	योरोप
सिंगापुर	सिंगापुर	एशिया
कुवैत	कुवैत	एशिया
मैक्सिको	मैक्सिको	मध्य अमेरिका
ग्वाटेमाला	ग्वाटेमाला	मध्य अमेरिका
पनामा	पनामा	मध्य अमेरिका

मामूली अन्तर से देश और राजधानी के नाम -

देश	राजधानी	भौगोलिक स्थिति
अल्जीरिया	अल्जीयर्स	उत्तरी अफ्रीका
ट्यूनीसिया	ट्यूनिस	उत्तरी अफ्रीका
ब्राजील	ब्राजिलिया	दक्षिण अमेरिका
अल साल्वेडोर	सैन साल्वेडोर	मध्य अमेरिका
एण्डोरा	एण्डोरा-ला-विले	दक्षिण पश्चिम योरोप

एक से अधिक नगरों में राजधानी -

देश	राजधानी	भौगोलिक स्थिति
बोलीबिया	ला पाज/सुकरे	प्रशासनिक, विधायी/ न्यायिक
दक्षिण अफ्रीका	प्रिटोरिया/ केपटाउन/ब्लोमफोंटेन	प्रशासनिक/विधायी/न्यायिक
मोंटे निग्रो	पोजरिका/केतिंजे	प्रशासनिक/न्यायिक और विधायी
चिली	सेंतियसागो/वाल्पेरैजो	विधायी
मलयेसिया	पुत्राजया/कुआलालम्पुर	प्रशासनिक/आर्थिक (वित्तीय)

● इन्दौर (म.प्र.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

राजू के पड़ोसी काका के साथ एक व्यक्ति आया। काका ने व्यक्ति के बारे में बताया- 'यह मेरे काका के मामा के दामाद की पत्नी की बुआ का बेटा है।' दोस्तो, राजू को तो चक्कर आ गया। पर क्या तुम बता सकते हो कि पड़ोसी काका के साथ आया व्यक्ति उनका रिश्ते में क्या लगता है?

(उत्तर इसी अंक में)

।। भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत ।।

सीख काम आई

बाल प्रस्तुति

प्रखर पाराशर

सदियों पहले बच्चे पढ़ाई के लिए गुरुकुल जाया करते थे। उन्हें वहाँ कार्य भी करना होता था। उन्हें अपने साथियों के अलावा गुरु तथा गुरुमाता का साथ मिलता था। ऐसे ही एक गुरुकुल में पिनाक भी रहता था। वह अपने मित्र प्रभु के साथ गुरुकुल की सफाई का कार्य करता था। शाम के समय गुरुजी छात्रों को कोई न कोई ज्ञानवर्धक बात बताया करते थे। एक दिन उन्होंने छात्रों को पाण्डवों के लाक्षागृह (लाख के महल) से निकलने की बात बताई। उन्होंने बताया कि लाख के महल में आने का निमंत्रण उन्हीं के अपने भाइयों ने उन्हें दिया था। पाण्डवों को यह पता नहीं था कि जिस महल में वे रहने जा रहे हैं वह जलने वाले पदार्थ (लाख) का बना है। यह कौरवों की चाल थी वे पाण्डवों के प्रति ईर्ष्या की भावना रखते थे तथा रात में वे इस महल को जला देना चाहते थे।

जब पाण्डवों ने अपने सौतेले काका को प्रणाम किया तब उन्हें काका विदुर ने उन्हें खतरे से बचाने के लिए उन्हें षड्यंत्र के बारे में बता दिया। तब पाण्डवों ने एक ऐसे व्यक्ति को बुलवाया जो सुरंग बनाने के कार्य में कुशल था। वे सुरंग के रास्ते से सुरक्षित बाहर निकल जाना चाहते थे। उन्होंने यह भी पता लगा लिया कि इस महल को बनाने वाले पाँच पुरुष तथा एक महिला था। जिस मंत्री ने इस महल को बनवाया था उसने उन मजदूरों को बताया था कि यह महल उन पाण्डवों के लिए बनाया है जो

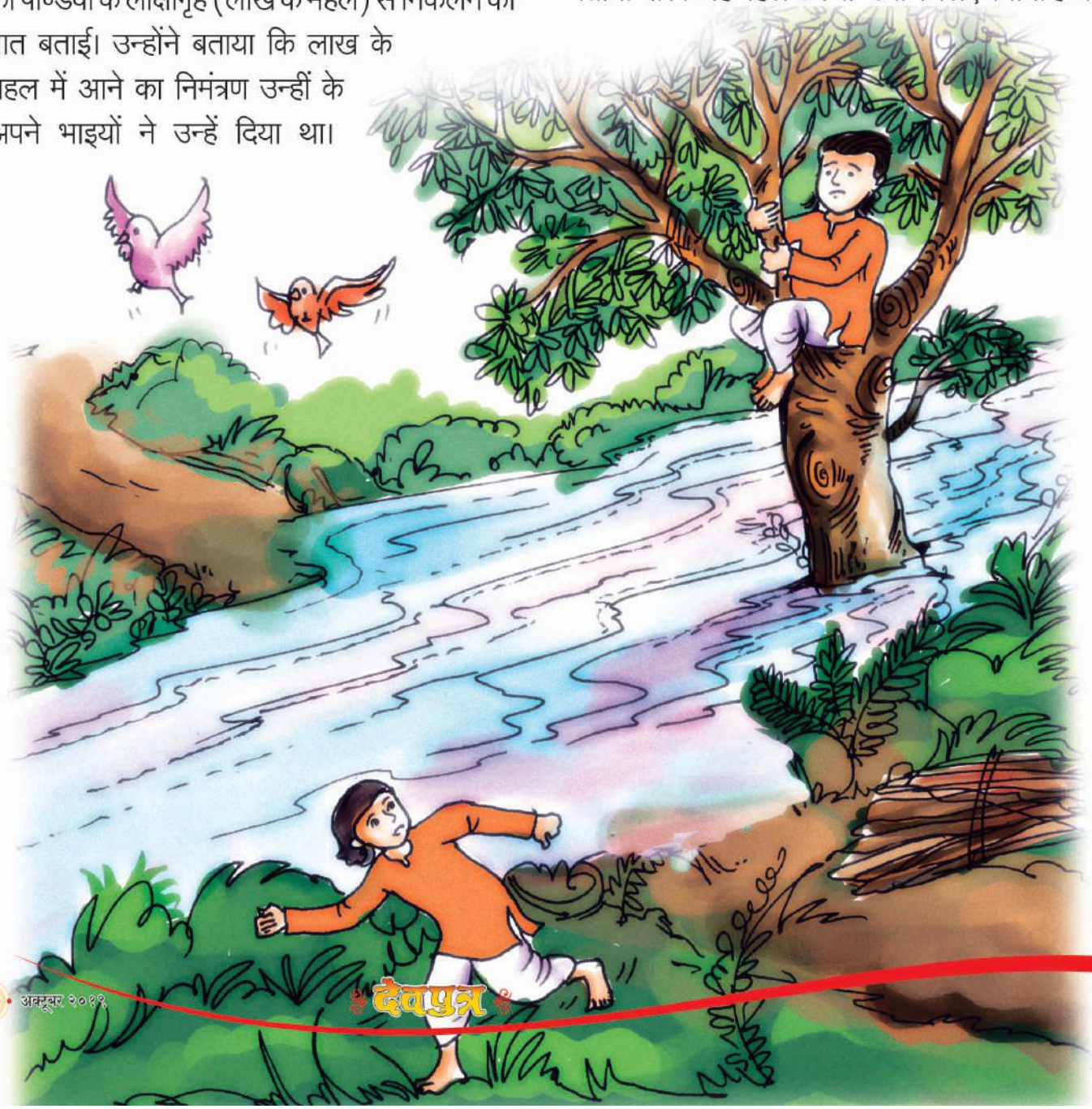

बहुत ही चालाक है तुम्हें उनसे सावधान रहना होगा। वे मजदूर अतिआत्मविश्वासी थे इसलिए उन्होंने बुजुर्ग मंत्री की बात का विश्वास ही नहीं किया। इस बात का लाभ उठाकर पाण्डवों ने उन्हीं पाँचों मजदूरों तथा उनकी माता को ही उस महल में जला दिया तथा पाण्डव स्वयं सुरंग के रास्ते सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए।

इस कहानी के द्वारा गुरुजी ने छात्रों को सिखाया कि हमें अपने से बड़ों की बातों को महत्व देना चाहिए तथा उन पर विश्वास करके स्वयं को सुरक्षित रखना चाहिए।

इस कहानी के पूर्ण होते ही सभी विद्यार्थी सोने चले गए।

अगले दिन सुबह के समय पिनाक और प्रभु को गुरुजी ने होलिका दहन के लिए सूखी लकड़ियाँ लाने जंगल भेजा, उन्हें गुरुजी ने सूर्यास्त से पहले लौट आने को कहा क्योंकि जंगल में बहने वाली नदी का जल स्तर शाम के समय अचानक बढ़ जाया करता था। गुरुजी ने यह भी बताया कि अगर आने में देर हो जाए तो तुरंत किसी लम्बे पेड़ पर चढ़ जाना तभी सुरक्षित बच सकोगे उस पेड़ से तभी उतरना जब सुबह जलस्तर कम हो जाए।

दोनों छात्र आशीर्वाद लेकर जंगल में पहुँचे। जंगल के रास्ते पर प्रभु निशान बनाता जा रहा था जिससे वे शाम होने से पहले जंगल से बाहर निकल सकें। वे लकड़ियाँ एकत्रित करने लगे। जब कार्य पूर्ण हुआ तब उन्होंने आश्रम लौटने का निश्चय किया। वे खुशी-खुशी चल दिए लेकिन आगे चलकर उन्हें रास्ता नहीं मिल रहा था क्योंकि प्रभु कहीं-कहीं निशान लगाना भूल गया था। वे जल्दी-जल्दी रास्ता खोजने लगे किंतु तब तक सूर्य अस्त हो गया। उन्होंने देखा कि नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है उन्हें गुरुजी की बात याद आने लगी। वे दोनों बहुत डरने लगे।

पिनाक ने प्रभु से कहा- ''हमें तुरंत ही किसी ऊँचे और मजबूत पेड़ पर चढ़ जाना चाहिए।'' ''हमें समय देर नहीं करनी चाहिए।''

पिनाक तुरंत ही एक पेड़ पर चढ़ गया और उसने प्रभु को ऊपर आने के लिए कहा।

प्रभु को विश्वास नहीं था कि वह पेड़ पर सुरक्षित रहेगा इसलिए वह तेजी से जंगल में भाग गया।

रात में गुरुकुल के सभी सदस्य उन दोनों का इंतजार करते तथा चिंता करते रहे।

सुबह जलस्तर कम होने पर पिनाक गुरुकुल पहुँचा और उसने जंगल वाली घटना गुरुजी को बताई। गुरुजी तथा पिनाक अन्य छात्रों सहित जंगल में प्रभु को खोजने लगे तब उन्हें प्रभु अचेत अवस्था में एक चट्टान पर पड़ा मिला।

उसे गुरुकुल लाकर प्राथमिक चिकित्सा दी गई जिससे प्रभु को होश आया और उसने बताया कि इसने किस प्रकार बड़े साँप से डरकर चट्टान का सहारा लिया। भूख और प्यास के कारण उसे बेहोशी आ गई थी।

इस बात से सभी छात्रों ने सीखा कि हम सभी को बड़ों की बातों पर विश्वास करना चाहिए।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

आओ पता करें।

बच्चो! आपने यह अंक ध्यान से पढ़ा है तो बताओ निम्नांकित शब्द अंक की किस रचना में आए हैं।

भाग्य नगरी, खरी-खोटी, गुलमर्ग, अवशेषों, शरद चांदनी, सम्मुख, रासबिहारी, भैयादूज, कालपी, पार्थ

द्वन्द्व युद्ध

''महाराज! आपको मेरा हाथी कैसा लगा?'' कुतुबशाह ने छत्रपति शिवाजी से पूछा।

''बहुत ही शानदार।'' शिवा जी ने प्रसन्न मुद्रा में कहा।

''क्या आपके पास भी ऐसा कोई हाथी है?''

''हाँ! एक ही क्यों? हमारे पास इस तरह के बहुत से हाथी है।''

''सचमुच?'' बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ।

''हाँ! वास्तव में, मेरे पास ऐसे बहुत से हाथी हैं।'' छत्रपति बोले।

बादशाह की उत्सुकता बढ़ी– ''क्या ऐसा कोई हाथी आप साथ लाये भी हैं?''

''हाँ, काफी?''

''अगर ऐसा है तो क्या आप अपना कोई हाथी अखाड़े में उतारेंगे?''

''अवश्य ही।'' शिवाजी ने स्वीकृति दी।

छत्रपति भाग्यनगरी (हैदराबाद) पधारे थे। अबुलहसन कुतुबशाह की राजधानी में उनका भव्य स्वागत हुआ। बादशाह ने सुसज्जित महल में उनका सत्कार किया। सिंहासन से उठकर गले लगाया। उसके संदेह समाप्त हो गये। आशंकाए मिट गईं।

शिवाजी अनेक दिनों तक भाग्यनगरी में रहे। मैत्रीपूर्ण वार्ताओं में दिन गुजरते गये। महत्वपूर्ण संधियां भी हुईं। कुतुबशाह स्वयं शिवाजी की सुख–सुविधा की चिन्ता करता और नित्य नये आमोद–प्रमोद पूर्ण आयोजन होते रहते।

उस दिन शाही खेल हाथियों का द्वन्द्व युद्ध था। बादशाह और छत्रपति पास–पास बैठे द्वन्द्व युद्ध का आनन्द ले रहे थे। सारे दरबारी यथास्थान बैठे थे। दर्शकों के बाजे बज रहे थे। द्वन्द्व –युद्ध पूरे जोश में चल रहा था।

और छत्रपति ने बादशाह की चुनौती स्वीकार कर ली थी।

***

बादशाह ने सबसे ताकतवर हाथी को अखाड़े में

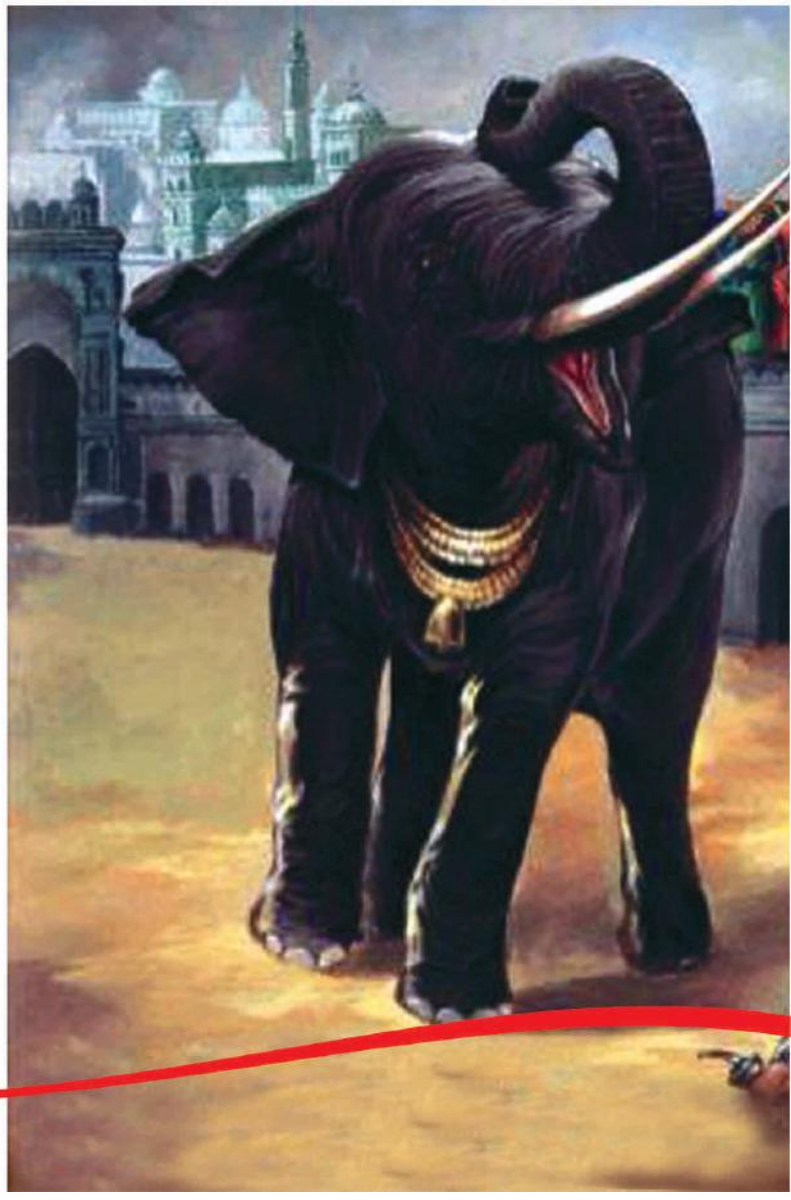

लाने का हुक्म दिया।

हाथी अखाड़े में आ गया। दर्शक उत्सुकता से छत्रपति के हाथी की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुतुबशाह बोला– ''महाराज, कहाँ है आपका हाथी? अखाड़े में बुलाइए न?''

शिवा जी मुस्काए और दाहिनी और घूमकर येसा जी कंक को देखा। महाराज का संकेत समझकर येसाजी ने सीधे महाराज के सामने आकर प्रणाम किया।

लोगों ने समझा कि येसा जी को हाथी लाने के लिए भेजा जा रहा है, लेकिन आश्चर्य! येसाजी ने अपने आभूषण उतार दिए। वे नंगी तलवार दाहिने हाथ में लेकर अखाड़े की ओर बढ़े, तब लोगों ने जाना कि कुतुबशाह के हाथी का मुकाबला यही जवान करेगा। दर्शक सांस साधकर मजबूत देहयष्टि के मानव और हाथी के बीच होने जा रही इस अनोखी भिड़ंत की कल्पना से सिहर उठे।

येसा जी ने अखाड़े में पहुँचकर हाथी को चुनौती देने के लिए गर्जना की। मस्त हाथी क्रुद्ध हो उठा और चिंघाड़ कर आगे बढ़ा।

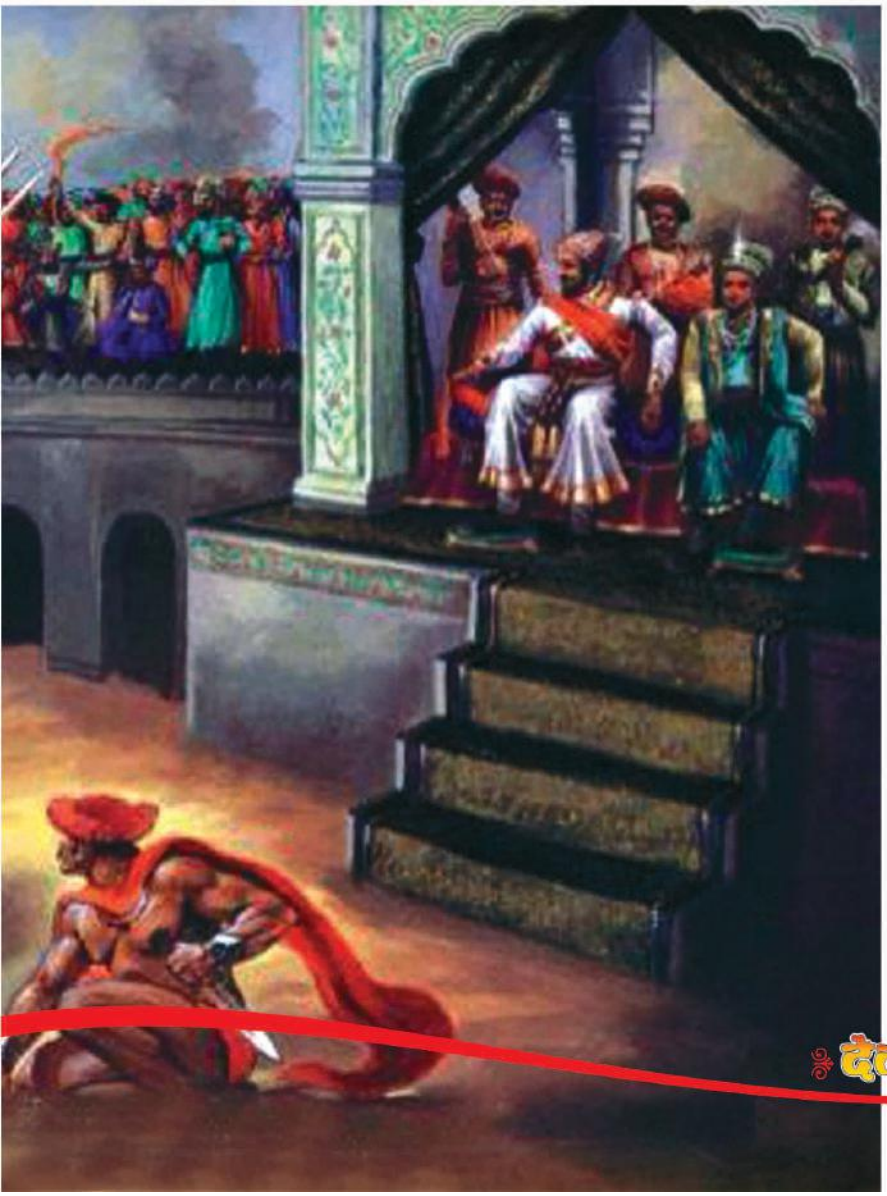

हाथी के वेग और आक्रोश से ऐसा लगा कि येसा जी की हड्डी–पसलियों का पता भी न चलेगा। लेकिन भाग्यनगरी के निवासियों ने देखा कि हाथी अखाड़े की दीवार से जा टकराया। येसाजी ने हाथी का वार बगल में हटकर बचा लिया। हाथी चोट से पीड़ित हो क्रोध से भर गया। उसने पीछे हटकर दोबारा हमला किया लेकिन येसा जी फुर्ती से फिर एक ओर हो गये। हाथी का सिर दीवाल से फिर टकरा गया। हर बार हाथी और जोर से टक्कर लगाता, लोग समझे कि येसा जी अब कुचले तब कुचले, लेकिन वह तो हर बार अलग ही खड़े दिखाई देते।

दर्शक येसा जी का पैंतरा देखते ही रह गये और वे फुर्ती से हाथी के पास पहुँच गये। हाथी ने उन्हें सूंड में लपेटने का उपक्रम किया। लोगों ने समझा कि मराठा सरदार जब बच नहीं सकता और हाथी इस आदमी को पटककर पैरों के नीचे कुचल देगा। लेकिन दूसरे ही क्षण खून की बौछार में येसा जी सिर से पैर तक नहा गये। उनकी तीखी तलवार के प्रहार से हाथी की सूंड़ कट कर भूमि पर गिर पड़ी और विशालकाय हाथी कटे हुए वृक्ष की तरह एक ओर ढहता दिखायी दिया।

भाग्यनगरी के नागरिक जंगली जीव पर मानव को विजयी होकर लौटते देखकर संतुष्ट थे और बादशाह स्तब्ध।

येसा जी ने मुस्कराते हुए आकर, छत्रपति शिवाजी और कुतुबशाह को प्रणाम किया। महाराज ने संतोष और कृपा से परिपूर्ण दृष्टि ने अपने साथी को देखा और वह स्वामी के अनुग्रह को पाकर कृतार्थ हुआ। बादशाह फटी–फटी आँखों से मराठा सरदार को देखता ही रह गया।

बात समझ में आई

कहानी

पवन कुमार वर्मा

लम्बू जिराफ आज सुबह से बहुत उदास था। वह अपनी लम्बी गर्दन और लम्बे पैर से बहुत परेशान था। जब वह घने जंगल में पेड़ों की हरी–हरी पत्तियाँ खाने जाता तो उसकी गर्दन पेड़ों की डालियों में फँसने लगती। उसके लम्बे पैरों में इतने कांटे चुभ जाते कि वह दर्द से छटपटाने लगता। खुले मैदान के अलावा वह सरलता से कहीं और नहीं जा सकता था।

जंगल के बाहर खुले मैदान में उसे हिरनों का झुण्ड दिखाई पड़ा। कुछ हिरन हरी घास खाने का आनन्द ले रहे थे, तो कुछ लम्बी दौड़ लगा रहे थे। उन्हें देखकर लम्बू जिराफ सोचने लगा कि अगर उसकी गर्दन छोटी होती तो वह भी इधर–उधर आसानी से दौड़ पाता।

वह उदास मन से आगे बढ़ गया। उसे जोर–जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी। पिंकू बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद रहा था। साथ में जोर–जोर से चिल्ला भी रहा था। वह तेजी से पेड़ के ऊपरी डाली पर पहुँच जाता, फिर झटपट नीचे भी उतर आता। लम्बू जिराफ सोचने लगा कि वह तो पेड़ पर चढ़ ही नहीं सकता।

इधर–उधर घूमता वह नदी के किनारे पहुँच गया। नदी का पेट भरकर पानी पीया। तभी उसे नदी में गुल्लू मगरमच्छ दिखाई पड़ा।

''कैसे हो लम्बू भाई?'' गुल्लू मगरमच्छ ने लम्बू जिराफ से पूछा।

''ठीक हूँ।'' लम्बू ने दबी आवाज में जवाब दिया।

''क्या बात है? बहुत परेशान लग रहे हो?'' गुल्लू अब नदी के किनारे आ गया था।

''ज्यादा कुछ नहीं। मैं अपनी लम्बी गर्दन और लम्बे पैर से बहुत परेशान हो गया हूँ। मैं कहीं भी आसानी से नहीं जा सकता।'' लम्बू ने अपना दुःख गुल्लू को बताया।

उसकी बात सुनकर गुल्लू मगरमच्छ बड़े जोर से हँसने लगा। उसे हँसता देख कर लम्बू जिराफ ने पूछा, ''तुम मेरी बात पर हँस क्यों रहे हो?''

''मैं तुम्हें इसका उत्तर दे सकता हूँ। लेकिन अभी तुम्हें मेरी बात समझ में नहीं आएगी।'' इतना कहकर गुल्लू वापस नदी में चला गया। लम्बू जिराफ उसे देखता रह गया।

गर्मी का मौसम आ गया था। जंगल में चारों और सुखा पड़ गया। पेड़–पौधे सूख रहे थे। नदी का पानी भी सूख गया। जंगल में जानवरों का बहुत बुरा हाल हो गया था। उन्हें खाने–पीने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ रही थी।

वहीं लम्बू जिराफ को बहुत परेशानी नहीं होती थी। जंगल में बहुत से पुराने पेड़ भी थे। जिनकी डालियों पर अब भी हरी पत्तियाँ थीं। अपनी लम्बी गर्दन के कारण लम्बू जिराफ आसानी से उन पत्तियाँ तक पहुँच सकता था।

उसे तो भरपेट खाना मिल रहा था। लेकिन दूसरे छोटे जानवर परेशान थे। वे सब लम्बू जिराफ से मदद लेने पहुँचने लगे। लम्बू पेड़ की ऊँची डालियों से हरी पत्तियाँ तोड़कर उन्हें खाने के लिए दे देता था।

एक दिन वह पानी पीने नदी के किनारे पहुँचा। नदी पूरी तरह सूख चुकी थी। उसका मित्र गुल्लू मगरमच्छ भी पानी की कमी के कारण परेशान था।

''कैसे हो गुल्लू?'' लम्बू जिराफ ने उससे पूछा।

''बहुत बुरा हाल है मेरे दोस्त। तेज धूप के कारण नदी सूख गई है। थोड़ा बहुत पानी बचा है। नदी में

मछलियाँ भी बहुत कम रह गई है। किसी तरह थोड़ा खा पीकर जीवित हूँ। अब तो बस बरसात का इंतजार है।'' उसने हाँफते हुए अपनी बात पूरी की।

''घबराओ मत। बरसात आते ही फिर से चारों ओर हरी–हरी घास निकल आएगी। नदी में पानी भी भर जाएगा। फिर सबकी समस्या एक साथ खत्म हो जाएगी।'' लम्बू जिराफ बोला।

''तुम ठीक कह रहे हो। लेकिन इस जंगल में चारों ओर तुम्हारी बहुत प्रशंसा हो रही है। मुझे यह सुनकर अच्छा लगा कि मेरा मित्र सभी जानवरों की खूब मदद कर रहा है। तुम्हारी लम्बी गर्दन के कारण उन्हें पेड़ों की ऊँची डालियों से हरी पत्तियाँ आसानी से खाने को मिल पा रही है।'' गुल्लू बोला।

''हाँ! हमें एक दूसरे की सहायता तो करनी ही चाहिए।'' लम्बू जिराफ बोला।

''बिल्कुल सही। यह सब तुम्हारे लम्बे पैर और लम्बी गर्दन के कारण आसानी से हो सकता है। अब तो तुम्हें अपनी लम्बी गर्दन से कोई शिकायत नहीं है।'' इनता कहकर गुल्लू मगरमच्छ बड़े जोर से हँसने लगा। उसकी बात सुनकर लम्बू जिराफ शरमा गया।

''देखो। कभी किसी से बराबरी नहीं करनी चाहिए। हर परिस्थिति में खुश रहना चहिए। हमारे पास जो कुछ है, उसी से लोगों की मदद करनी चाहिए। आज जो कुछ तुम कर रहे हो, वह कोई नहीं कर सकता।'' गुल्लू ने उसकी खूब प्रशंसा की।

अब लम्बू जिराफ को अपने लम्बे पैर और लम्बी गर्दन से कोई शिकायत नहीं थी। उसे अपने मित्र की बात पूरी तरह समझ में आ गई थी।

● शिवपुर (उ.प्र.)

अमावस का दीप

● राजेन्द्र पंजियार

अस्त हो चला सूरज अंधियारे ने पांव पसारा।
यह चिंता ले चला- "सुबह तक कैसे हो उजियारा?
सारी धरती अंधकार में डूबी अकुलाएगी।
मेरे वापस आने तक यह कैसे सुख पाएगी?"
ये बातें सुन दीप एक लघु था थोड़ा मुस्काया।
सिर ऊँचा कर साहस से बोला जो सबको भाया।।
"सारे भू के अंधकार से मैं संघर्ष करूँगा।
जितनी मुझमें शक्ति उसी से मैं आलोक भरूंगा।"
उसकी हिम्मत देख तभी सूरज प्रसन्न हो फूला।
क्यों वह करे फिक्र वसुधा की सारी चिंता भूला।।
दिया उसे आशीष और साहस को खूब सराहा
हृदय लगाकर चूम लिया वरदान दिया मनचाहा।।

● भागलपुर (बिहार)

दीपक

● राजा चौरसिया

ओ माटी के दीपक तुमको
शत-शत बार प्रणाम।
सूरज के वंशज कहलाते
जपी-तपी, साधक, आराधक।
तरह-तरह के पवन-झकोरे
कभी नहीं बन बन पाते बाधक।
ज्योतित, अलोकित करता यह
रूप बहुत अभिराम।।
तुम हो जहाँ वहाँ थोड़ी सी।
अँधियारे के इस प्रताप से
मावस भी पूनम है लगती।
परहिताय का व्रत है पल-पल
धन्य तुम्हारा काम।।
झाँकी बाकी लगे तुम्हारी
दीवाली के शुभ अवसर पर।
सजकर पूजा की थाली में
लगते हो तुम कितने सुंदर
महिमामयी मनोहर छवि से
घर कहलाए धाम।।

● उमरियापान (म.प्र.)

छा गए हैं दीप

• हरीश निगम

रोशनी के गीत गाते,
गाँव नगरों को सजाते
और अंधियारे मिटाते,
आ गये हैं दीप!

हर गली, आँगन-छतों पर,
बात, संदेशों-खतों पर,
व्यस्तताओं, फुरसतों पर,
छा गए हैं दीप!

रात के नीचे खड़ों को,
चूड़ियों, नथनी, कड़ों को
आज हर छोटे-बड़ों को,
भा गये हैं दीप!

• सतना (म.प्र.)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'दीप' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

कौन है यहाँ?

● राजेश गुजर

बच्चो, यहां आपका मित्र छुपा है जानने के लिए बिंदु लगे स्थानों में रंग भरें।

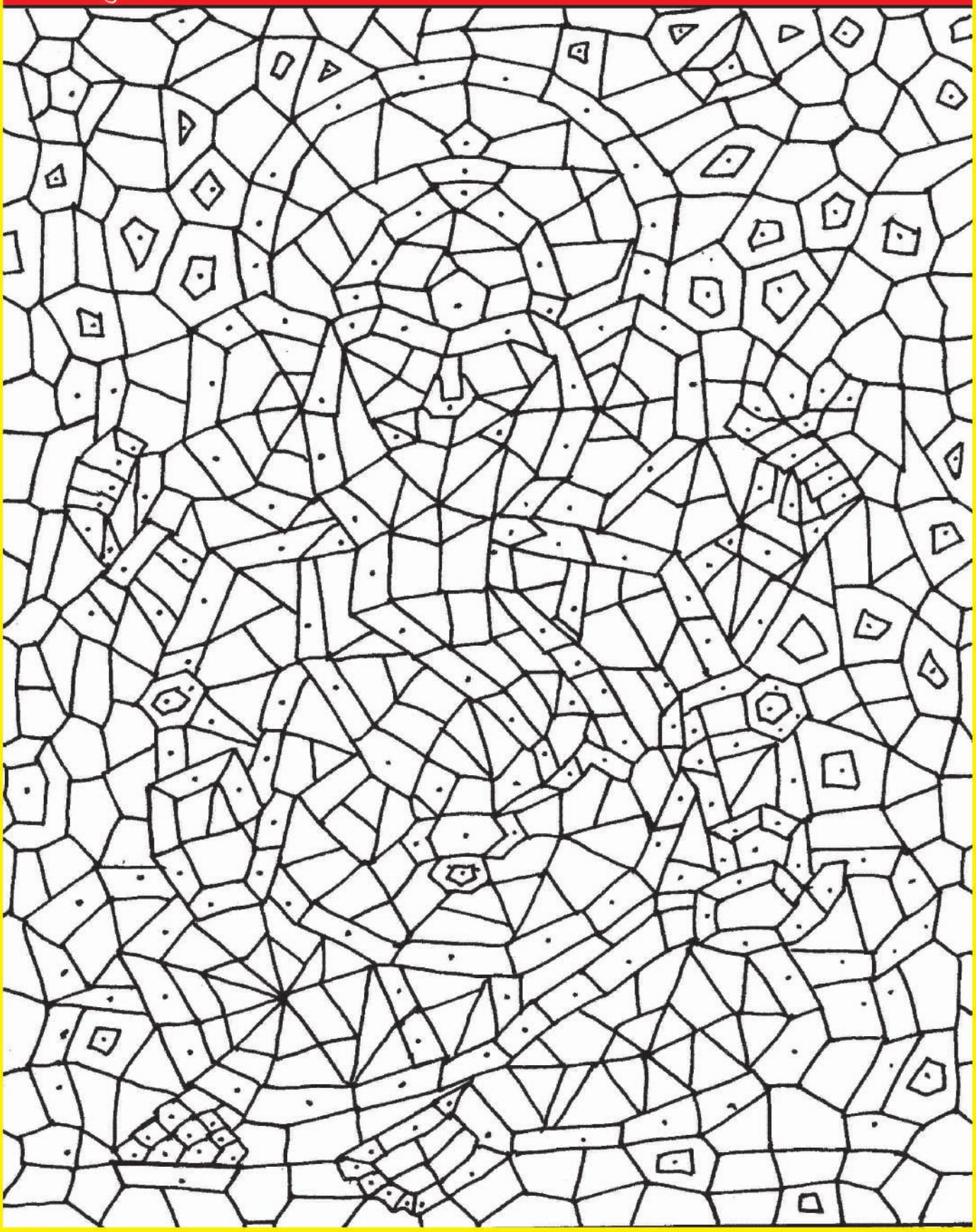

गोवर्द्धन पूजा

कविता

प्रभुदयाल श्रीवास्तव

दादीजी ने गोबर लेकर,
एक बड़े गोवर्धन थोपे।
पेट बनाया एक बड़ा सा।
लगता था वह बड़े घड़े-सा।
तुरंत बनाये धड़ पर दो सिर।
आँख नाक मुँह बना दिये फिर।
बड़े जतन से सिर के ऊपर,
केश सलोने सुंदर रोपे।

दो-दो हाथ बना कंधे पर,
चार पैर नीचे के धड़ पर।
पैरों में शृंगार सजाये।
हाथों में भी नग पहनाये।
फिर दोनों कंठों पर माँ ने,
बना दिये थे हार अनोखे।

चार हाथ औ चार पैर के,
दो सिर वाले यह गोवर्धन,
दीवाली के शुभ अवसर पर,
पूजा करता इनकी जन-जन।
महिलाएं तो सालों से ही,
पूजा करती इन्हें संजोके।

गोवर्धन पूजा का मतलब
पूजा है पर्वतराजों की।
मेघों को ये रोक-रोक कर,
झड़ी लगाते बरसातों की।
पर्वत से ही फूटा करते,
कल-कल झरने, सुंदर सोते।

• छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

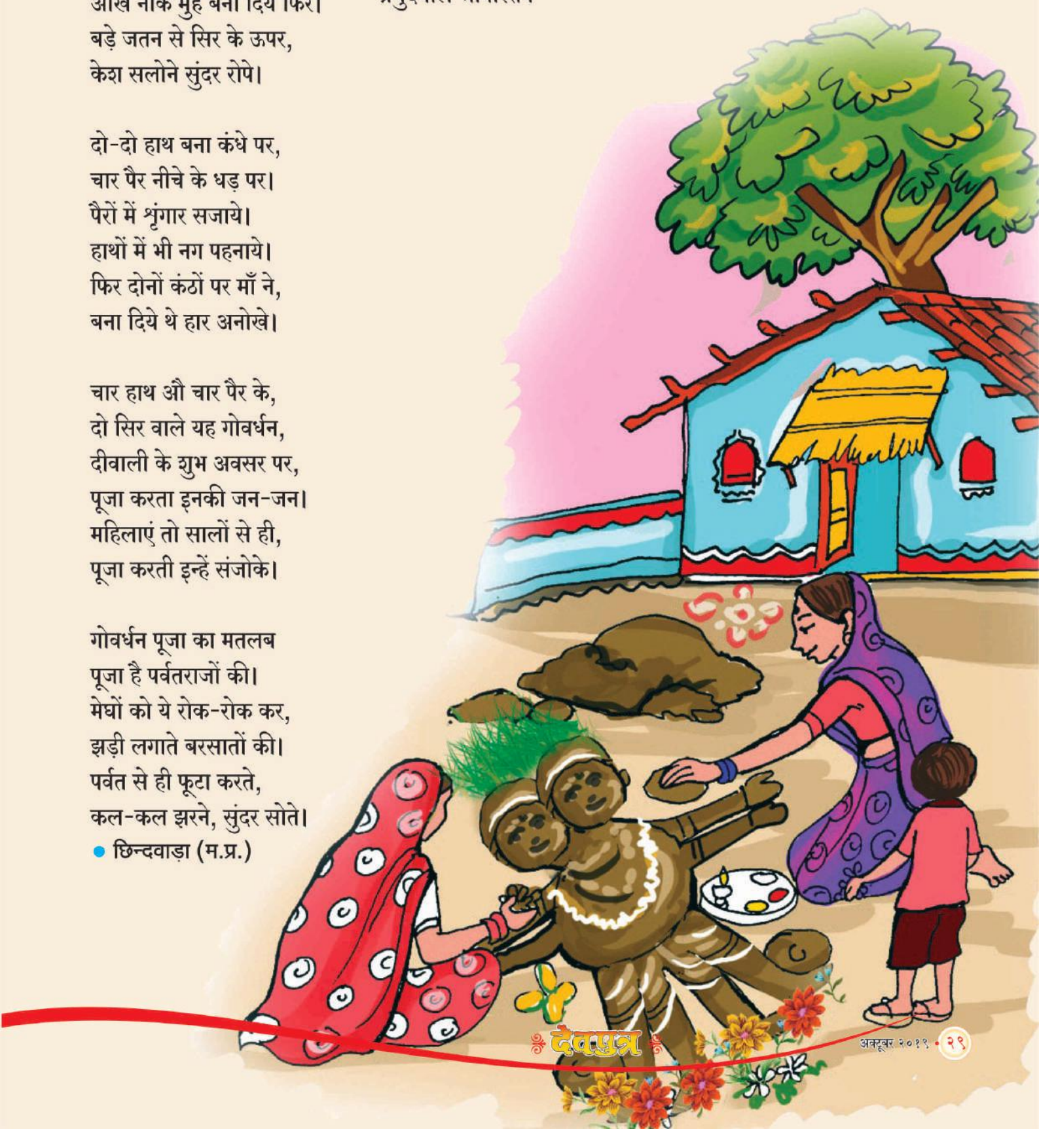

सागर तट का वृक्ष अनोखा,
भारत में मिल जाता।
लंका बर्मा से भी इसका,
बहुत पुराना नाता।
ताड़ समान वृक्ष यह लम्बा,
बिना डालियों वाला।
बारहमासी फल देता है,
लगता बड़ा निराला।
शानदार फल कच्चे इसके,
सबकी प्यास बुझाते।
और पके फल से इसके हम,
व्यंजन कई बनाते।
जटाजूट छिलके, जड़, पत्ते,
काम सभी हैं आते।
घर औषधि बर्तन गद्दे तक,
इससे लोग बनाते।
इसकी ताड़ी बड़ी निराली,
पीते और पिलाते।
कभी-कभी इसको पीकर के,
पक्षी धुत हो जाते।

● भोपाल (म.प्र.)

केरल का राज्य वृक्ष

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

नारियल

डॉ. परशुराम शुक्ल

दूसरा
चित्रकथा- ...
हरिया मैं जब देखता हूं तुम सुस्ताते नजर आते हो..
काम ठीक से करते नहीं, लापरवाह और आलसी होते जा रहे हो..
यही हाल रहा तो मुझे दूसरा नौकर रखना पड़ेगा
रख लीजिए मालिक..
..फिर वो और मैं मिलकर आसानी से सारा काम पूरा कर लेंगे.

।। राष्ट्रीय डाक दिवस : १० अक्टूबर ।।

ऐसे सुधरी डाक व्यवस्था

कहानी

शिखर चन्द जैन

सम्राट वन का पोस्टमास्टर जनार्दन जिराफ बहुत परेशान था। उसकी तमाम कोशिशों के बावजूद जंगल की डाक व्यवस्था में आये दिन कोई न कोई गड़बड़ हो ही जाती थी। कभी–कभी उसे राजा शेर सिंह से फटकार भी सुननी पड़ती। वह बेचारा करता भी क्या। कभी तो चौकीदार गब्दू गधा सुबह उठने में देर कर देता जिसके कारण कार्यालय का सारा काम देर से ही शुरु हो पाता। कभी एक साथ इतनी डाक आ पहुंचती कि बीनू बकरी और हर्षित हिरण को दो–दो बार स्टेशन जाना पड़ता, इसमें काफी समय नष्ट हो जाता। बरसात के दिनों में हालत और भी बिगड़ जाती। बीनू बकरी और हर्षित हिरण बरसाती झाड़ियों और पेड़–पौधों के कारण से रास्ता भटक जाते या फिर बोझ से लदे होने के कारण फिसलने की डर से बहुत धीरे–धीरे चलते। इससे प्रायः हर दिन बाहर से आई डाक देर से बँटती। इसी वजह से आये दिन उसे किसी न किसी जानवर से खरी खोटी सुननी पड़ती या फिर शेर सिंह से फटकार सुननी पड़ती। पर एक दिन हद हो गई। ठीक समय पर सूचना न मिलने के कारण ढेर सारे बच्चों की परीक्षा छूट गई। जंगलवासी बौखला उठे। सभी ने मिलकर जनार्दन जिराफ को घेर लिया। गुस्से में आकर किसी ने उसे एकाध थप्पड़ भी मार दिया। वह तो शेर सिंह वहाँ पहुँच गए और उन्होंने किसी तरह समझा–बुझाकर सभी जानवरों को वहाँ से हटाया अन्यथा उनकी पिटाई हो जाती। सभी चले गये तो शेर सिंह ने जनार्दन जिराफ से कहा– ''पोस्ट मास्टर जी, यदि सात दिनों के भीतर आप डाक व्यवस्था दुरस्त न कर पाए तो मैं आपको नौकरी से निकाल दूंगा।'' जनार्दन की आँखों से आँसू बहने लगे। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बेचारा सुबह से रात तक ढेरों काम खुद करता फिर भी कोई सुधार नहीं आ रहा था। जनार्दन मुँह लटका कर बैठ गया। उधर पोस्ट मास्टर के घेराव की खबर चारों ओर फैल चुकी थी। पड़ोसी जंगल के पोस्ट मास्टर भोलू भालू ने जब यह खबर सूनी तो दौड़े–दौड़े वह जनार्दन के पास आ पहुँचा। जनार्दन और वह अच्छे मित्र थे। दोनों विद्यालय में साथ पढ़ चुके थे। भोलू ने जनार्दन को उदास बैठे देखा तो ढाढस बंधाया और बोला– ''मित्र! तुम चिन्ता न करो। मैं दो दिन की छुट्टी लेकर आया हूँ। तुम्हारे पास रहकर मैं तुम्हारी समस्या को समझूंगा और कोई न कोई हल अवश्य निकाल लूंगा।'' इसके बाद भोलू ने जनार्दन से डाकखाने के सभी कर्मचारियों के बारे में जानकारी ली और दो दिनों तक सुबह से शाम तक पूरा कार्यालय बारीकी से देखता रहा। मोनू बंदर छंटाई करता। जनार्दन बैठकर उसे देखता और मदद करता। सब कुछ समझ कर भोलू ने कहा– ''तुम्हारे अपने कर्मचारियों कि ड्यूटी जरा बदलनी होगी तथा एक नया कर्मचारी भी रखना होगा।''

जनार्दन बोला– ''तुम कुछ भी करो पर मुझे अपमानित और बेरोजगार होने से बचाओ। भोलू ने सभी कर्मचारियों की ड्यूटी में व्यापक फेरबदल कर दिया। कोकू मुर्गा चौकीदार के लिए नियुक्त किया गया। गब्दू गधे को चौकीदार से हटाकर सुबह रेल्वे स्टेशन से डाक लाने के काम में लगा दिया। उसके साथ कोमल कुत्ते की ड्यूटी लगाई गई। उधर बीनू बकरी और हर्षित हिरण को

नजदीकी डाक बांटने के काम में लगाया गया। डाक छंटाई की जिम्मेदारी स्वयं जनार्दन जिराफ ने ली और उस पर मोहर लगाने का काम गब्दू गधे को सौंपा। गब्दू गधा चाहे जितनी भी डाक आये, एक ही बार में लाद लाता। कोकू मुर्गा समय से उठा देता। गब्दू गधा मार्ग न भटक जाये, इसके लिए कोमल कुत्ता उसका मार्गदर्शन करता। अपनी सूंघने की शक्ति के कारण वह कभी रास्ता नहीं भटकता। बीनू बकरी और हर्षित हिरण भी थोडी-थोडी डाक मिलने पर फुर्ती से दौड़-दौड़कर डाक बांट देते। पहले जनार्दन चुपचाप बैठा रहता था। अब वह डाक छंटाई करता और छंटाई में लगा मोनू बंदर दूर-दूर की डाक बांटने लगा। ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर कूद-कूदकर वह भी फटाफट डाक बांट आता।

जंगल की डाक व्यवस्था बिल्कुल ठीक हो गई। सबकी शिकायतें दूर हो गयीं और शेरसिंह भी खुश हो गये। जनार्दन जिराफ ने भोलू भालू को हृदय से धन्यवाद दिया। भोलू ने चतुराईपूर्ण व्यवस्था से सबकुछ ठीक कर दिया था, जबकि जनार्दन ने किसी को क्षमता अनुसार काम नहीं दे रखा था।

● **कोलकाता (प.ब.)**

यह देश है वीर जवानों का

युद्ध भूमि में असाधारण वीरता, साहस और शौर्य के लिए भारत सरकार द्वारा प्रदान किया जाने वाला सर्वोच्च सैनिक सम्मान है 'परमवीर चक्र'। २६ जनवरी १९५० से देश के राष्ट्रपति द्वारा प्राप्त होने वाले इस सम्मान को अभी तक केवल २१वीर सैनिक प्राप्त कर सके हैं। इस अंक में आप पढ़ेंगे क्रमशः उनका संक्षिप्त परिचय –

मेजर सोमनाथ शर्मा

असाधारण शौर्य का परिचय देने के लिए मेजर सोमनाथ शर्मा को भारत के प्रथम परमवीर चक्र से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। यह सम्मान उन्हें मरणोपरांत प्रदान किया गया था।

आपका जन्म ३१ जनवरी १९२३ को हिमाचल के कांगड़ा जिले के ढाड़ गाँव में हुआ। आपके पिता मेजर अमरनाथ शर्मा सहित परिवार के अनेक सदस्यों के भारतीय सेना में सैन्य पदों पर रहने से अकूत देशभक्ति आपको रक्तसंस्कार से ही प्राप्त थी। नैनीताल में उच्चशिक्षा पाकर वे २२ फरवरी १९४२ को भारतीय सेना की कुमाऊँ रेजीमेंट में कम्पनी कमाण्डर के रूप में सेना में नियुक्त हुए। आपकी बचपन से ही खेलकूद में रुचि थी जिससे स्वभाव में चुनौती से साहसपूर्वक लड़ जाने की प्रवृत्ति सम्मिलित हो चुकी थी सेना में आते ही इसके प्रदर्शन का सुअवसर भी प्राप्त हो गया और सोमनाथ जी ने द्वितीय विश्वयुद्ध में अरकान आपरेशन में भाग लेकर अपने अदम्य साहस का परिचय दिया।

अक्टूबर-नवम्बर १९४७ भारत पाकिस्तान के बीच पहला युद्ध चल रहा था। दस दिन बीत चुके थे कि ३१ अक्टूबर १९४७ को सोमनाथ शर्मा की कंपनी को काश्मीर घाटी में बड़गाम की ओर कूच करने के लिए श्रीनगर में उतारा गया। ५०० कबायिली पाकिस्तानी भी गुलमर्ग से बड़गाम की ओर बढ़ रहे थे। मेजर शर्मा ने अपनी कंपनी के साथ मोर्चा सम्हाल लिया। दैववश युद्ध में पहले ही हॉकी खेलते हुए उनकी बाँह चोटिल हो चुकी थी और उस हाथ पर प्लास्टर बंधा था लेकिन वे सामने से हो रही गोलियों की बरसात का उचित उत्तर देने एक हाथ से ही गोलियाँ चला रहे थे।

पचास गज की दूरी पर उनकी छोटी सी सैनिक टुकड़ी तीन ओर से भीषण गोलाबारी झेलती, प्रत्युत्तर देती शत्रु सैनिकों से घिर गयी। आपत्ति के समय ही वीरता की सच्ची परीक्षा होती है। सैनिक निरंतर हताहत होते जा रहे थे पर मेजर अंतिम गोली और अंतिम सांस तक लड़ने का प्रण लिए अटल होकर डटे थे। अन्ततः ३ नवम्बर १७४७ को एक मोर्टार हमले ने उनका बलिदान ले ही लिया लेकिन उनने भारत की और सेना न पहुँच जाने तक दुश्मन को आगे नहीं बढ़ने दिया। आज कश्मीर का जो भाग भारत के पास है उसे मेजर सोमनाथ शर्मा ने अपने प्राणों का मोल देकर बचाया है।

आओ, मरणोपरांत देश के सर्वोच्च सैनिक सम्मान परमवीर चक्र से अलंकृत इस महावीर योद्धा को कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करें।

।। सरदार पटेल जयंतीः ३१ अक्टूबर ।।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का संकल्प

प्रसंग

डॉ. श्याम मनोहर व्यास

गजनी के आक्रांता महमूद गजनी ने ११ शताब्दी में गुजरात पर आक्रमण कर प्रसिद्ध सोमनाथ के मंदिर को विध्वंस कर डाला था। क्षत्रिय वीरों ने डट कर सामना भी किया पर उन्हें पराजय का मूँह देखना पड़ा।

१५ अगस्त सन् १९४७ को देश आजाद हुआ। देश के उपप्रधानमंत्री व गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल नवम्बर सन् १९४७ में गुजरात के दौरे पर गए। अपनी मातृभूमि गुजरात में सोमनाथ के मंदिर को खण्डहर अवस्था में देख वे व्यथित हो गए।

उन्होंने उसी दिन समुद्र के किनारे स्थित सोमनाथ के ध्वंस अवशेषों के समक्ष विशाल जन समुदाय के सामने संकल्प लिया – ''आज से ठीक छः माह पश्चात् इसी स्थान पर भव्य सोमनाथ का मंदिर बनेगा। यदि यह कार्य नहीं होता है तो मेरा उप प्रधानमंत्री व गृहमंत्री पद पर बने रहना व्यर्थ है।''

इतिहास साक्षी है ठीक छः माह पश्चात् उस स्थान पर भव्य सोमनाथ का मंदिर बना। मंदिर के उद्घाटन के समय देश–विदेश के लाखों श्रद्धालु भक्त वहाँ एकत्रित हुए। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने मंदिर का उद्घाटन किया था। आज भी लाखों श्रद्धालुजन इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन को आते हैं।

● उदयपुर (राज.)

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला– माता सुमित्रा, पांचाल राजा द्रुपद, इटली, देव सेनापति कार्तिकेय, दस, जीजामाता तथा शहाजी राजे, आचार्य धुण्डिनाथ, बहादुर, अहमद शाह अब्दाली, संत नारायण दास जी महाराज

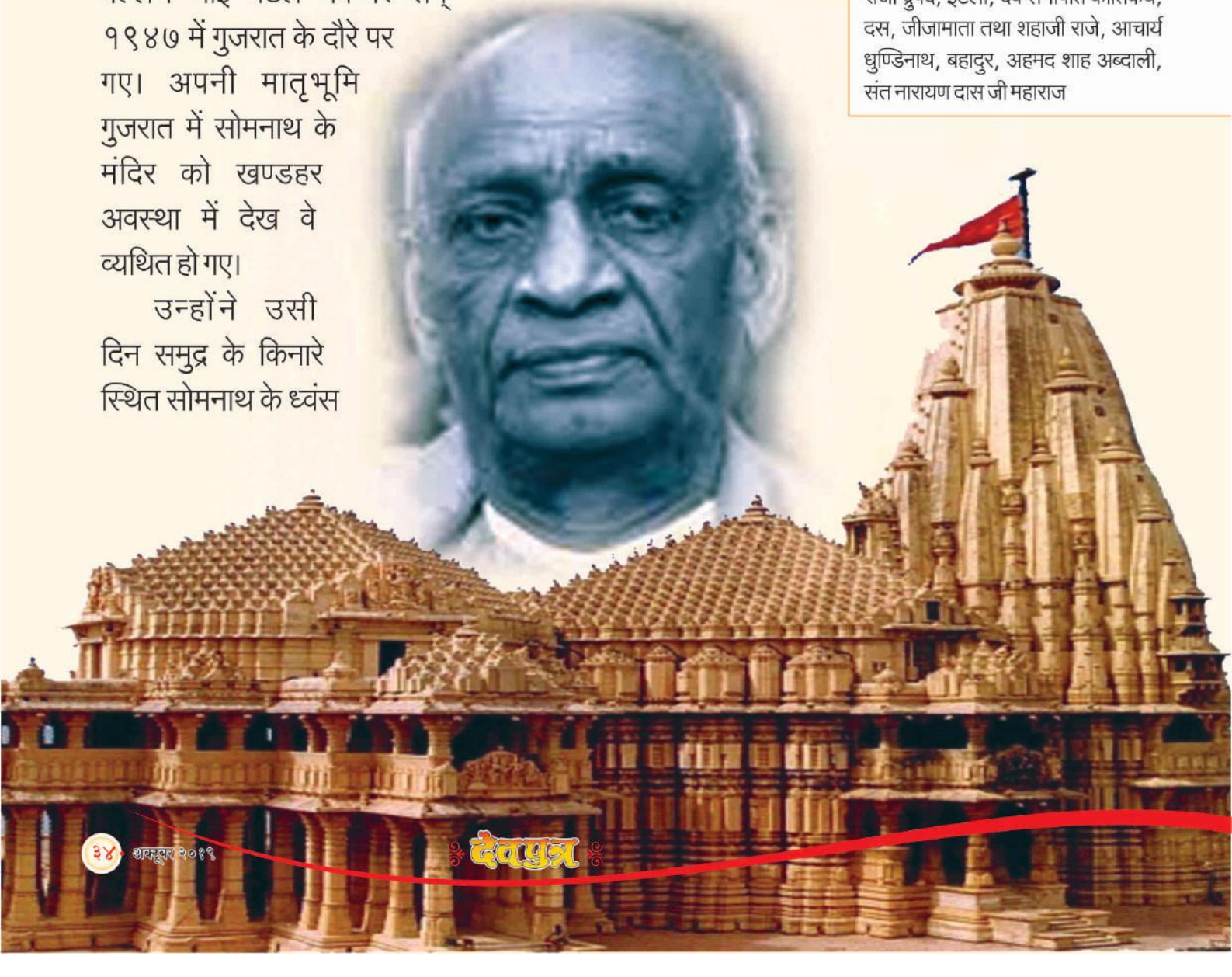

परोपकारी बालक

कहानी

मधु गोयल

पार्थ विद्यालय जाने के लिए सीढ़ियों से उतरा ही था, तो देखा– दरवाजे पर एक बूढी भिखारिन खड़ी है। भिखारिन ने उसे देख कर कहा, ''बेटा! कुछ खाने को मिलेगा क्या? ''कुछ देर सोचने के बाद पार्थ ने अपने बस्ते से टिफिन निकाल कर उस अम्मा को दे दिया और ''लो अम्मा कह विद्यालय जाने लगा।''

भिखारिन – ''बेटा! यह तो तुम्हारा अपना खाना है, विद्यालय में क्या खाओगे?''

''मेरे विद्यालय की बस निकल जाएगी, कोई बात नहीं आप खा लेना।'' और विद्यालय चला गया।

मध्यावकाश में दीदी ने पार्थ से पूछा, ''क्या बात है पार्थ आज तुम भोजन नहीं कर रहे हों?''

''वो दीदी! मैंने अपना टिफिन उस बूढी अम्मा को दे दिया जो विद्यालय आते समय दरवाजे पर खड़ी थी, वह बहुत भूखी थी, खाना माँग रही थीं, मैंने उन्हें अपना टिफिन दे दिया।''

''ओह!! अब तुम क्या खाओगे?''

कुछ सोचकर – ''बच्चो! अपना टिफिन पार्थ से बाँटो।'' एक साथ आवाज आई। ''जी दीदी।''

दोपहर बाद विद्यालय छूटने पर पार्थ जब घर पहुँचा तो सीढ़ियों से ही, ''माँ भूख लगी है खाना दो।'' कहता सीढ़ियाँ चढ़ गया।

माँ– ''क्या बात है बेटा, आज इतनी भूख क्यूँ?''

''माँ! विद्यालय जाते समय एक बूढ़ी अम्मा कुछ खाने के लिए माँग रही थी, मैंने अपना टिफिन उनको दे दिया।''

''अपना टिफिन क्यूँ ?'' मुझसे लेकर देना था।

''विद्यालय की बस निकल जाती माँ!''

''ओह हाँ!!''

भोजन करने के बाद पार्थ ने माँ से पूछा...''माँ! भिखारी क्यों होते हैं?''

''बेटा, कभी–कभी शारीरिक विकार के चलते काम नहीं कर पाने से भीख मांगने को मजबूर होते हैं, कुछ लोग काम नहीं करना चाहते, हमारी तथाकथित परोपकारी वृत्ति उन्हें सदा के लिए भिखारी बना देती है। बेटा! समाज में जो बूढा और लाचार हो उनकी मदद करनी चाहिए।

''तो उन बूढ़ी अम्मा के घर में क्या कोई नहीं है?''

''यह तो पता नहीं बेटा, रही होगी उनकी कोई मजबूरी?'' अगले दिन फिर ऐसा ही हुआ, अम्मा रोज–रोज आने लगी पार्थ कभी घर से और कभी अपना टिफिन देता रहा।

एक दिन ऐसा हुआ वह भिखारिन अम्मा नहीं आई, पार्थ इंतजार करता रहा और दरवाजा ताकता रहा, लेकिन वह नहीं आई। ऐसे ही कई दिन निकल गए। पार्थ का ध्यान उन बूढ़ी अम्मा से हट ही नहीं रहा था। फिर माँ से पूछा, ''क्यूँ नहीं आ रही

अम्मा?''

''बेटा कही चली गई होंगी, या बीमार हो गई होंगी?''

''माँ! तो क्या उनका कोई नहीं है?''

''यह तो नहीं जानती, लेकिन हाँ कोई तो होगा।''

विद्यालय में घोषणा हुई कि कल सब बच्चे अपनी गणवेश के लिए अपनी अपनी कक्षा की दीदी को राशि लाकर देंगे।

अगले दिन पार्थ माँ से गणवेश के लिए पैसे लेकर विद्यालय के लिए निकला, गली के मोड़ पर पहुँचा ही था तो देखा बहुत भीड़ लगी है, भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा, तो देखा वही अम्मा सड़क पर लेटी हुई है, पार्थ स्तब्ध रह गया, मालूम करने पर पता चला वह इस दुनिया को छोड़ चुकी है, यह जानकर पार्थ की आँखें भर आईं।

पुलिस भी थी, लोग अंतिम संस्कार के लिए चंदा एकत्र कर रहे थे, पार्थ ने यह सुनकर अपनी गणवेश के लाये हुए पैसे दे दिए। पैसे देकर दुःखी मन से, पास मे खड़ी विद्यालय बस में बैठ कर विद्यालय चला गया।

कक्षा की दीदी सब बच्चों से पैसे एकत्र कर रही थी लेकिन पार्थ अपने पैसे अम्मा के अंतिम संस्कार के लिए दे चुका था। कक्षाचार्य के पूछने पर बोला ''दीदी! वह भिखारिन अम्मा अब इस दुनियाँ में नहीं रही, वह पैसे मैंने उनके अंतिम संस्कार के चंदे में दे दिए।''

दीदी ने पार्थ को अपने पास बुलाया और कहा, ''बेटा यही समय की मांग थी, जो व्यक्ति दूसरों का भला करते हैं और जिनके मन में परोपकारी भावना होती है वह सदैव मुस्कुराते रहते हैं, तुम ने तो अपने नाम को सार्थक कर दिया। हमारे जीवन में सार्थकता तभी आती है, जब दूसरों के लिए कुछ किया जाए।''

दीदी ने पार्थ का गाल थपथपा कर कहा, ''कोई बात नहीं, गणवेश की राशि कल ले आना। जाओ अपनी सीट पर बैठ जाओगे।

विद्यालय छूटने पर घर जा कर पार्थ ने सब कुछ अपनी माँ को बताया।

शिखा ने अपने बेटे का माथा चूम गले लगा लिया और कहा, ''बेटे! अपनी आत्मा की सुनो! आत्मा कभी असत्य नहीं कहती।''

● गाजियाबाद (उ.प्र.)

पहेलियाँ

बाल प्रस्तुति

नितेश देवांगन/दिनेश कश्यप

खड़ी करो तो सुस्ताऊँ,
जहाँ कहो मैं पहुँचाऊँ।
पेट्रोल या डीजल बिन,
तय कर लेती राह कठिन।।

छीलो तो छिलका नहीं,
फोड़ो तो न बीज।
वर्षा में आए सदैव,
बूझों वह क्या है चीज।।

एक कहानी मैं कहूँ,
सुन लो मेरे पूत।
बिन पंख के उड़ गई,
बांध गले में सूत।।

गुस्साने पर ठण्डा होता,
चुप होने पर गर्म।
बूंदें कभी गिराने लगता,
बोलो मेरा मर्म।।

क्लोरीन और सोडियम का यौगिक,
सागर व झीलें इसका धाम।
इसके बिना सब फीका-फीका
आता है खाने के काम।।

● बिर्रा (छ.ग.)

(उत्तर इसी अंक में)

॥ स्तंभ ॥

स्वयं बनें वैज्ञानिक : जादू की स्केल

आलेख
डॉ. राजीव तांबे

अनुवाद
सुरेश कुलकर्णी

आपने अपने कंपास बॉक्स में स्केल तो देखी होगी जिसमें इंच, सेंटीमीटर आदि नापने के पैमाने लिखे होते हैं चलो आज एक नई स्केल से आपका परिचय करवा देते हैं।

इस के लिए सामग्री लगेगी–

आधा किलो लाल गोभी/एक नीबू/ एक चम्मच साबून पावडर/एक छलनी/एक छुरी/दो बर्तन/ आधा लीटर पानी/ड्राइंग शीट/एक कैंची

चलो दोस्तो! सामग्री तो हमने ले ली, अब करते हैं प्रयोग की शुरूआत–

सबसे पहले हमारे पास जो ड्रॉइंग शीट है उसमें से ३ बाय ९ से.मी. लम्बे आकार की कुछ पट्टियां काट लीजिए। अब जो लाल कलर की गोभी ली है उसके पत्ते काटकर आधे लीटर पानी में डालकर पानी गरम कर लीजिए। पत्ते करीब ६ से ७ मिनट तक उबाल लें। पानी का रंग लाल सुर्ख हो जाएगा। पानी ठंडा होने के उपरान्त गोभी के पत्ते उसमें चूर दें।

क्या हुआ?

पानी का रंग जामुनी हो गया है। अब यह जामुनी पानी छान ले। अब इस जामुनी पानी में हमने ड्रॉइंग शीट की पट्टियाँ काट कर रखी है उसमें भिगो के रखो। इब इन पट्टियों को सुखाकर रखें। अब ये ही पट्टियां हमारी जादुई स्केल है।

इसे लिटमस पेपर कहते है।

इन लिटमस पेपर पर नीबू के दो बूंद डालो और देखो क्या होता है? ये पट्टियां लाल सुर्ख हो जाती है ना? बराबर। अब दूसरी पट्टियां लीजिए। उस पर जरा सी साबुन का पावडर डालो और देखो तो वही पट्टियां नीली हो जाएगी।

यह ऐसा क्यों होता है? यह भी आपको बता देते है।

ये जादूकी स्केल मतलब ये पट्टियां हमारा घर में बना लिटमस पेपर है। खटास जो नीबू में होती है उसके कारण लिटमस पेपर लाल हो जाता है और अल्कलाइन के कारण वह नीला हो जाता है। खट्टी चीजों में हाईड्रोजन के अंश होते हैं। उसे ही अम्ल या एसिड कहते हैं जैसे इमली, सिरका, टमाटर, संतरा, कैरी आदि में खटास मौजूद रहती है। इसके उपरान्त अल्कलाइन का मतलब होता है क्षार, लवण जो पाया जाता है खाने का सोडा, साबुन या डिटर्जेंट पाया जाता है।

अगर हमने कोई अन्य पदार्थ लिटमस पेपर पर डाला और उसका रंग नहीं बदला तो उसे उदासीन कहते हैं। उदासीन मतलब कोई फर्क नहीं अर्थात क्रियाशून्य।

अब आप घर पर अंगूर, प्याज, शलजम या चाय पत्ती का प्रयोग कर लिटमस पेपर बनाकर देखे और हमें बताना न भूले। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

• पुणे (महा.)

जानकारी

राजेश गुजर

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा

'लौह पुरुष' सरदार वल्लभ भाई पटेल के १४३वें जन्मदिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' का ३१ अक्टूबर २०१८ को लोकार्पण किया। बच्चो, जानिए इसके बारे में रोचक जानकारी –

- स्टेच्यू ऑफ यूनिटी प्रतिमा की ऊँचाई १८२ मीटर है, यह अमेरिकी स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी (९३मी.) से दुगुनी ऊँची है।
- यह प्रतिमा गुजरात के नर्मदा जिले के केवड़िया में नर्मदा नदी के किनारे साधु टापू पर बनाई गई है। यह सरदार सरोवर से ३.३ कि.मी. दूर है।

इस प्रतिमा के होंठ, आँखें, जैकेट के बटन ६ फीट से भी बड़े हैं, पैर की अंगुली ऊँचाई ६ फीट है। हथेली ७० फीट की है, पैरों की ऊँचाई ८५ फीट से ज्यादा है।

- सरदार की प्रतिमा के नीचे २५ मीटर ऊँचा आधार है, जमीन में ४५ मीटर नीचे नींव (फाउण्डेशन) है।
- नर्मदा नदी के मध्य में बनी यह मूर्ति १८० कि.मी. की तेज हवाओं को भी झेल सकती है, रिक्टर पैमानों पर ६.५ तीव्रता के भूकंप का भी यह सामना कर सकती है।
- इस प्रतिमा को ७ कि.मी. की दूरी से देखा जा सकता है। इसमें ४ धातुओं का प्रयोग किया है, ८५ प्रतिशत तांबा है ताकि जंग ना लगे।
- प्रतिमा के निर्माण में २९९७ करोड़ रूपये खर्च हुए हैं, २.१२ लाख क्यूबिक मीटर्स कंक्रीट, १८ हजार टन स्टील, ३५५० टन ब्रॉंज शीट्स, १८५०० टन रॉड्स का भी इस्तेमाल हुआ है।
- ६ हजार टन स्ट्रेक्चर्ड स्टील का प्रयोग हुआ है, इसे बनाने में २५० इंजीनियरों, ३९०० मजदूरों ने ३ साल ९ महीने दिन–रात काम किया।
- इस प्रतिमा को डिजाइन मूर्तिकार राम सुतार (९३ वर्षीय) ने अपने नोएडा स्थित वर्कशॉप में तैयार किया है, पहले ३ क्ले मॉडल ३० फीट तक ऊँचे बनाए गए फिर उन्हें ३डी–इमेजिंग के जरिये बड़ा किया। ये कोर बॉल एक अण्डाकार सिलेण्डर जैसे हैं, इसमें कई जगहों पर स्टील प्लेट्स लगाई गई है।
- इस प्रतिमा को सिंधु घाटी सभ्यता की समकालीन कला से बनाया गया है।

प्रतिमा के पैरों के अंदर लिफ्ट बनाई है इससे पर्यटक सरदार प्रतिमा के हृदय तक जा सकेंगे। वहाँ एक गैलरी बनी है। ये नर्मदा बाँध के उच्चस्तर १४६.५ मीटर (गेट लगने के बाद) से भी ४६.५ मी. की ऊँचाई पर है।

- वहाँ से सरदार सरोवर बाँध के अलावा नर्मदा के १७ किमी. लंबे तट पर फैली फूलों की घाटी का दृश्य देख सकेंगे।
- यहाँ थ्री स्टार होटल और शापिंग काम्पलेक्स बना है, बुकिंग ऑनलाइन भी होती है।
- स्टेच्यू कॉम्पलेक्स सुबह ९ से शाम ६ बजे तक खुला रहेगा।

- **महेश्वर (म.प्र.)**

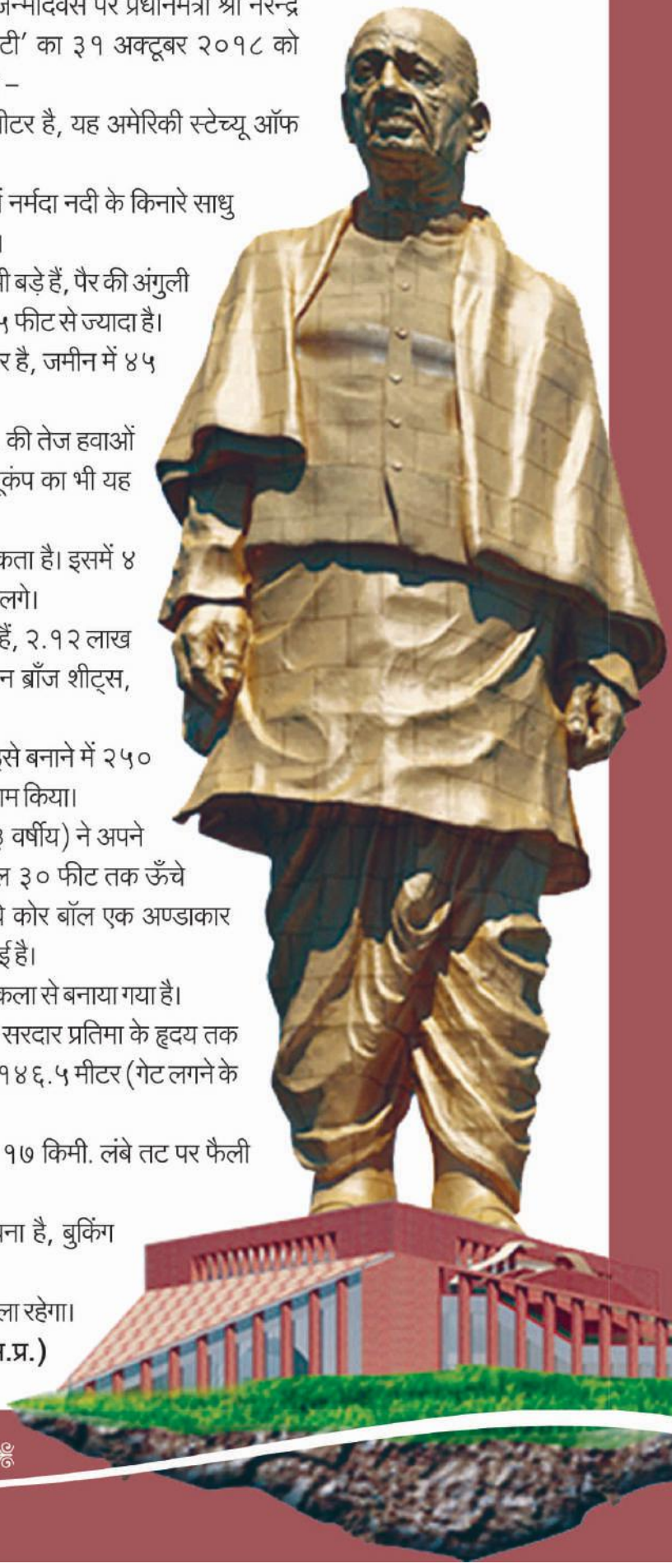

बड़े खिलैया राजू भैया

कविता

सृष्टि पाण्डेय

बड़े खिलैया, राजू भैया,
पढ़ने का तो नाम नहीं।
जब देखो तो धमा चौकड़ी,
कोई उनको काम नहीं।

खेला करते हैं वे लूडो,
कभी खेलते हैं वे चैस।
जब मन उनका भर जाता है,
लगा लिया करते हैं रेस।

अम्मा उनको समझाती हैं,
दीदी भी तो बतलाती हैं-
खेल खेलना बुरा नहीं है,
लेकिन क्या हर समय सही है?

नाम कमाने को तो भैया,
मेहनत करनी ही होगी।
बिना परिश्रम, कभी सफलता
नहीं तुम्हें हासिल होगी।

अभी समय है समझो भैया,
नहीं बनो तुम बड़े खिलैया।
पढ़ना भी है बहुत जरूरी,
बात मान लो, राजू भैया।

● शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

तेल या पेट्रोलियम

सचित्र विज्ञान चर्चा-
संकेत गोस्वामी

मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल या खनिज तेल.. ये पेट्रोलियम का हिस्सा हैं. कच्चा तेल क्रूड ऑयल कहलाता है. तेल या पेट्रोलियम, धरती के अंदर गहराई में पाया जाता है. यह वहां पहुंचा कैसे?

करोड़ों वर्ष पहले, पृथ्वी की सतह पर आज की तुलना में कहीं अधिक पानी हुआ करता था. नन्हें जीव सतह के निकट उथले पानी में रहा करते थे. जब वे मर जाते तो उनके शरीर समुद्र की तह में गिर जाते और मिट्टी तथा रेत के नीचे दब जाते.

वैज्ञानिकों के अनुसार पेट्रोलियम उन छोटे-बड़े जानवरों और पौधों के मृत शरीरों से बना जो करोड़ों वर्ष पहले धरती पर रहा करते थे. सदियों से अत्यधिक दबाव और उच्च ताप इन्हें गहरे रंग के एक द्रव्य में बदलता रहा यानी कच्चे तेल के रूप में. पेट्रोलियम कुछ चट्टानों और रेत में ठोस रूप में पाया जाता है.

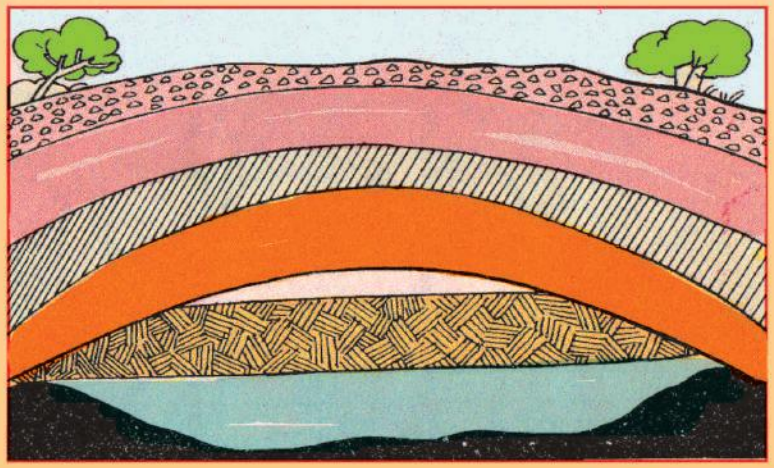

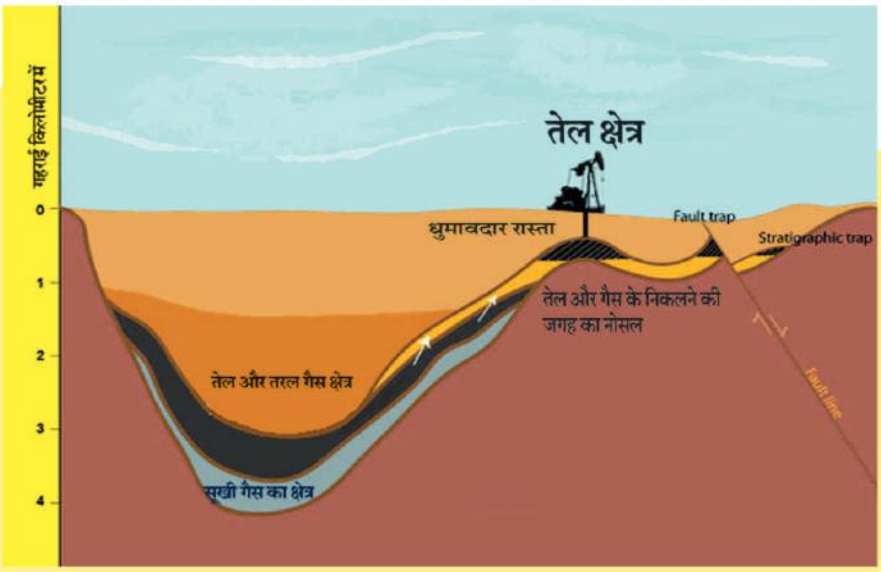

पहली बार पेट्रोलियम पाया गया था जब यह चट्टानों की दरार से रिस कर बाहर आ गया. पेट्रोलियम शब्द दो लैटिन शब्दों से बना है जिनका अर्थ होता है 'रॉक' (चट्टान) और 'ऑयल' (तेल).

पृथ्वी की सतह पर मिलने वाला तेल पर्याप्त नहीं था इस लिए धरती खोद कर उसकी तलाश की गई.

अब विश्व में तेल उत्पादन के प्रमुख देश हैं अमेरिका, वेनेजुएला, रूस, सऊदी अरब ,कुवैत, ईरान और इराक.

पृथ्वी में पेट्रोलियम की भरपाई नहीं हो सकती. यह एक बार खर्च हो गया, तो हो गया. असल में खनिज तेल ईंधन के रूप में ही नहीं रासायनिक उद्योगों के लिए भी महत्वपूर्ण हो चुका है.दुनिया में पेट्रोलियम के भंडार तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं. हमें इसे बचाना चाहिए.

समाप्त

पुस्तक परिचय

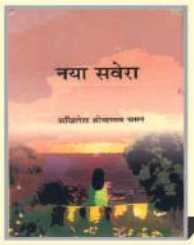

नया सवेरा

मूल्य १५०/-

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'** द्वारा लिखित एक छोटी बालिका मंजुला की प्रकृति के साथ आत्मीयता भरी घटनाओं से भरा संवेदना और उत्सुकता जगाता बाल उपन्यास।

प्रकाशन – विकल्प प्रकाशन, २२२६–बी, प्रथम तल, गली नं. ३३, पहला रास्ता, सोनिया विहार, दिल्ली ११००९०

आई तो आई कहाँ से

मूल्य १५०/-

विख्यात बाल साहित्यकार **डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'** द्वारा लिखित ज्वलंत समस्याओं के साथ बालिका विमर्श को प्रस्तुत करती बालमन की सटीक एवं गहन अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत बाल उपन्यास

प्रकाशन – नमन प्रकाशन ४२३१/१, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली ०२

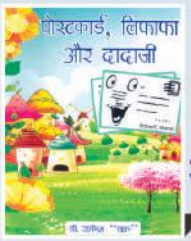

पोस्टकार्ड लिफाफा और दादाजी

मूल्य २००/-

सुविख्यात बाल साहित्यकार **राकेश चक्र** द्वारा लिखित गद्य–पद्य मिश्रित अनूठी शैली में लिखित रोचक सूचनाएं और सरस पदावली युक्त बाल उपन्यास।

प्रकाशन– हरेकृष्ण प्रकाशन, ९० बी, शिवपुरी, मुरादाबाद २४४००१ (उ.प्र.)

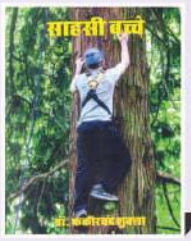

साहसी बच्चे

मूल्य ११०/-

प्रसिद्ध बाल साहित्य एवं विज्ञान लेखक **डॉ. फकीरचंद शुक्ला** द्वारा किशोरोचित साहस एवं बुद्धिमत्ता से भरा रोचक बाल उपन्यास

प्रकाशन – वनिका पब्लिकेशन, एनए १६८, गली नं. ६, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली १८

वनदेवी शामली

मूल्य ५०/-

वरिष्ठ बाल साहित्यकार **सौ. पद्मा चौगाँवकर** रचित एक शापित परी श्यामली की रोचक कथा के माध्यम से जीवन, मानवता व प्रकृति से जुड़े रहने का अनूठा संदेश देता बाल उपन्यास।

प्रकाशन – बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा, इंडस्ट्रियल एरिया एक्स., नाला रोड़, २२ गोदाम, जयपुर ३०२००६ (राज.)

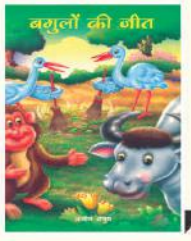

बगुलों की जीत

मूल्य ६०/-

सुप्रसिद्ध बाल रचनाकार **अंजीव अंजुम** रचित वनचर एवं जलचर प्राणियों की नभचर बगुलों के साथ व्यवहार का रोचकता एवं जिज्ञासामूलक मनोरंजक बाल उपन्यास।

प्रकाशन – आयुष बुक्स, डी ३–ए, विश्वविद्यालयपुरी, गोपालपुरा, बायपास, जयपुर १८

छः अंगुल मुस्कान

- विष्णु प्रसाद चौहान
- सुनिल कुमार माथुर

एक व्यक्ति ऐसा था जिसकी आँखों की रोशनी जाती रही थी। उसने दही के बारे में बहुत सुन रखा था, लेकिन कभी खाया नहीं था। उसने किसी से पूछा कि दही कैसा होता है? दूसरे ने जवाब दिया।

''सफेद होता है।'' दूसरे ने उत्तर दिया।

अब बेचारा अंधा व्यक्ति क्या जाने की सफेद कैसा होता है। उसने पूछा– ''सफेद कैसा होता है?''

''सारस जैसा।'' जवाब मिला।

''और सारस कैसा होता है?'' अंधे व्यक्ति ने पुनः सवाल किया।

उस आदमी ने अपनी कोहनी को मोड़ा और हथेली से चोंच जैसी बनाई और अंधे व्यक्ति को टटोलने को कहा। फिर बोला 'ऐसा होता है सारस।' उसकी मुड़ी बाँह को टटोलने के बाद अंधे व्यक्ति ने लंबी सांस लेकर कहा, फिर तो दही खाना बहुत मुश्किल होता होगा।

भिखारी – बाबूजी! चाय के लिए इस गरीब को दस रुपए दीजिए। भगवान आपका भला करेगा।

बाबूजी – लेकिन चाय तो पाँच रुपए की आती है।

भिखारी – क्या आप नहीं पियेगे हुजूर!

आपकी पाती

- जया मोहन

मैं आपकी पत्रिका की प्रशंसक हूँ और पाठक भी नियमित हूँ। आपकी पत्रिका सिर्फ मनोरंजन का माध्यम ही नहीं अपितु बच्चों के लिए ज्ञान का भंडार है।

सनातन से लेकर आधुनिक कहानियाँ जानकारियों का भंडार है। ज्ञान विज्ञान से संबंधित कथा, कविता बच्चों को लुभाते भी हैं उन्हें संस्कार भी सिखाते हैं।

पत्रिका दिनों-दिन उन्नति के शिखर चढ़े यही मेरी कामना है।

-प्रयाग (उ.प्र.)

सही उत्तर : पहेलिया - सायकिल, ओला, पतंग, बादल, नमक

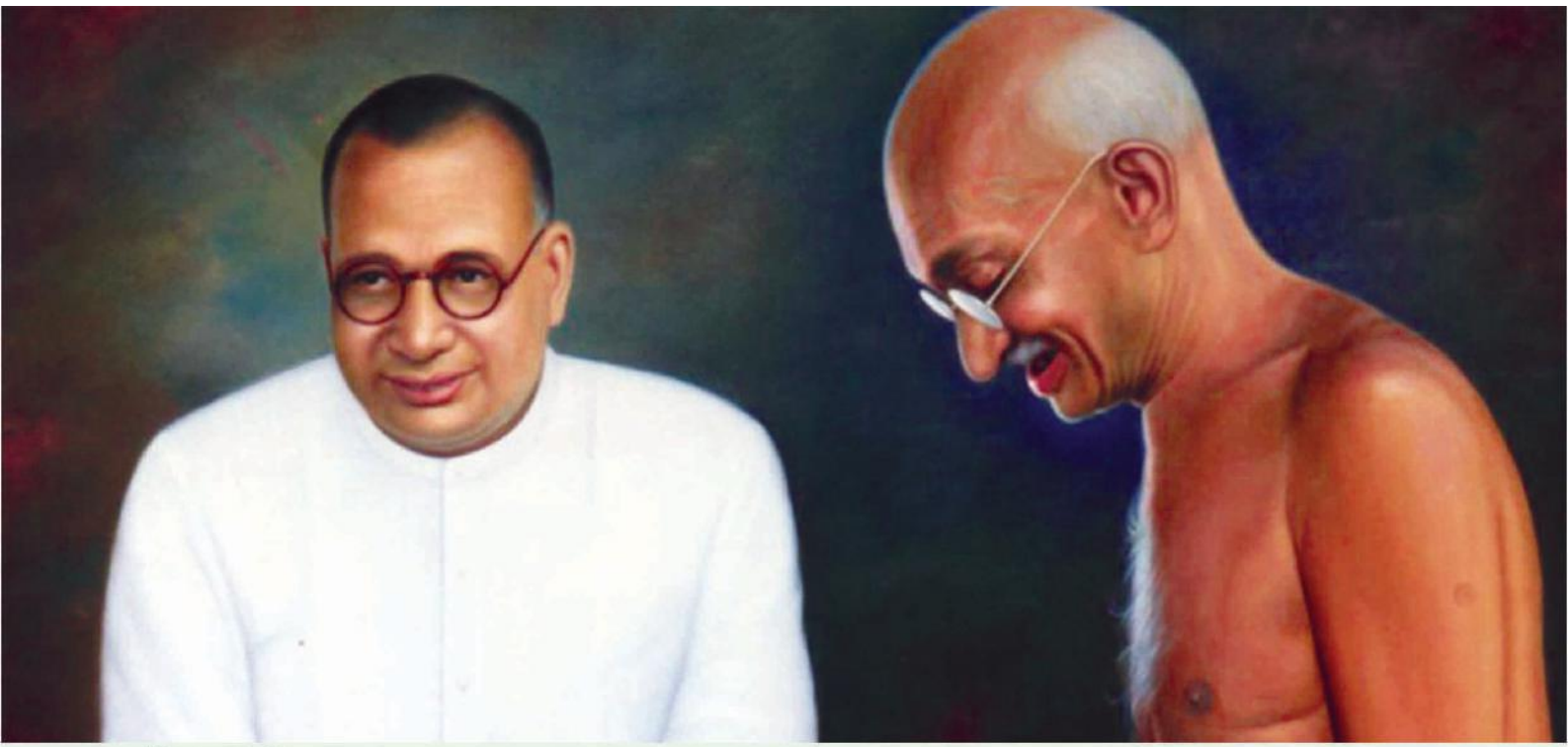

॥ स्तम्भ ॥

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

श्री जमनालाल बजाज ने एक बार गांधीजी से कहा, ''यह तो मैं जानता हूँ कि आपका मुझ पर बहुत अधिक स्नेह है, लेकिन मैं देवदास की तरह आपका पुत्र बनना चाहता हूँ।''

गांधीजी ने यह सुनकर चौड़े डीलडौल वाले जमनालाल बजाज की ओर देखा और हंसकर बोले, ''आप यह चाहते हैं सो तो ठीक है। लेकिन लोग बेटे को गोद लेते हैं, पर यहाँ तो बेटा बाप को गोद में ले लेगा।''

****

गांधी जी जहाँ कही भी जाते पत्रकार उनका पीछा न छोड़ते थे। एक बार एक पत्रकार ने उनसे पूछा, ''क्या आपको विश्वास है कि मरने के बाद आप स्वर्ग में जाएंगे?''

गांधी जी ने उत्तर दिया, ''मुझे नहीं मालूम कि मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिलेगा या नरक, परन्तु यह अवश्य जानता हूँ कि जहाँ कही भी जाऊंगा, पत्रकार वहाँ अवश्य मिलेंगे।''

****

एक बार जब स्वर्गीय नवीन जी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री जेल में थे तो नवीन जी ने अपनी कविता 'जूठे पत्ते' जो समाजवादी विचारों की है, शास्त्री को सुनाई। कविता की एक पंक्ति है, ''जन को जन के आगे कर फैलाते देखा।'' इसके बाद नवीन जी सो गए और जेल का एक सेवक उन्हें पंखा झलता रहा। जब नवीन जी सोकर उठे तो शास्त्री जी बोले कि नवीन जी, मैंने भी एक कविता लिखी है, जो इस तरह है– 'जन पर जन को विजन (पंखा) डुलाते देखा।' इसके बाद नवीन जी ने अपने लिए कभी पंखा नहीं झलवाया।

चित्र बनाना सीखो

- चाँद मो. घोसी

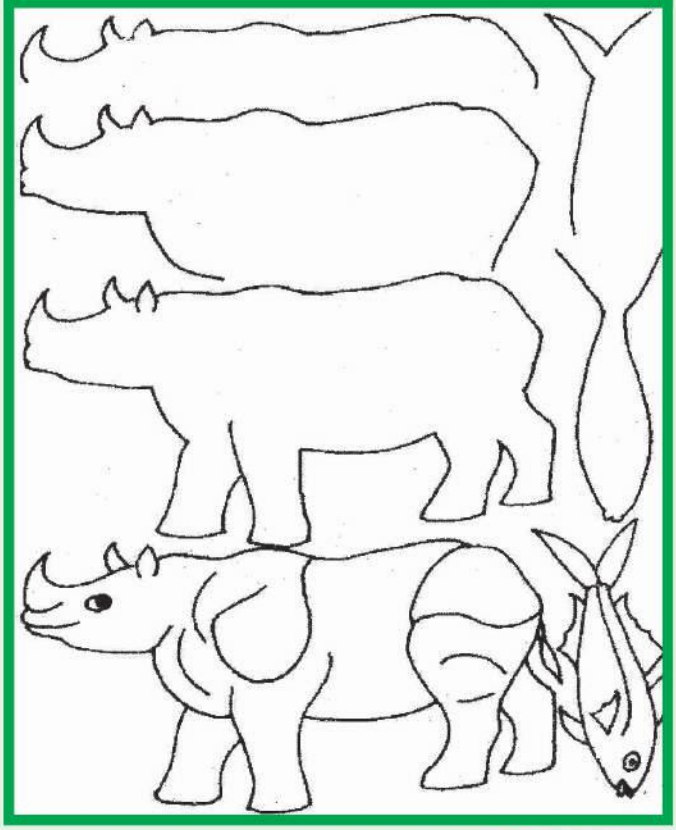

काले बादल

चित्रकथा : देवांशु वत्स

देवपुत्र परिवार-पत्र मेला

बच्चो! हम सबके जीवन में अपनेपन का भाव अपने परिवार से ही प्रारंभ करते हैं। यह वाट्सएप और ई-मेल का युग है ऐसा माना जाता है लेकिन आपकी पुरानी पीढ़ी अर्थात् अनेक के दादा-दादी, नाना-नानी इस नए प्रचलन से अनभिज्ञ हैं ऐसे परिवारजनों के लिए पत्र वर्षों पुराना माध्यम होकर भी उतना ही सशक्त है।

देवपुत्र आपके लिए एक विशिष्ट आयोजन कर रहा है वह है 'देवपुत्र परिवार-पत्र मेला'। इसमें सम्मिलित होने के लिए आपको पाँच पत्र लिखना होंगे।

एक- अपने दादा-दादी को

दो- अपनी माँ को

तीन - अपने आचार्य, दीदी/शिक्षक को

चार- किसी ऐसे व्यक्ति को जो आपके परिवार का सदस्य तो नहीं पर आपके परिवार से उसका संबंध इतना है कि उसे आप पारिवारिक रिश्तों का नाम देकर पुकारते हैं जैसे रिक्शे वाले भैया, फूल वाली अम्मा, सफाई वाली काकी, किराने वाले काका आदि।

पाँच - पाँचवा पत्र लिखिए अपनी भारत माता यानी देश के नाम, इस पत्र में आप देश के लिए क्या करना चाहते हैं अपना वह संकल्प और उसे पूरा करने की आपकी योजना का उल्लेख करें।

पत्र लिखते समय हम चाहते हैं कि आप अंकल/आंटी, सर/मेडम आदि के स्थान पर भारतीय सम्बोधन का उपयोग करें।

पत्र में आप अपने स्वाभाविक विचार लिखें न कि उसे सुने सुनाए, रटे रटाए आदर्श से ठसाठस भर दें। हाँ सहज रूप से आप किसी आदर्श या प्रेरणा से प्रभावित हैं तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

- पत्र सुवाच्य अक्षरों में हिन्दी भाषा में लिखा हों।
- यह पत्र लगभग ३०० से ५०० शब्दों में हो।
- प्रतियोगिता केवल अष्टमी से द्वादशी तक अध्ययनरत बच्चों के लिए है। अतः अपनी कक्षा का प्रमाण पत्र अपने प्राचार्य/प्रधानाचार्य से प्रमाणित कर अवश्य भेजिए।
- पत्र हमें ३१ दिसम्बर, २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाएं।
- अपनी प्रविष्टि (पाँचों पत्रों की एक प्रविष्टि मानी जाएगी)के साथ प्रविष्टि पत्र पृथक से कागज पर स्वयं लिखकर भेजें।

प्रविष्टि भेजने का पता है - संयोजक देवपुत्र, परिवार-पत्र मेला
द्वारा/देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

पत्र का प्रारूप होगा-

श्रीमान संयोजक महोदय,
देवपुत्र परिवार पत्र मेला
इन्दौर

महोदय मैं.....कक्षा .....देवपुत्र द्वारा आयोजित देवपुत्र परिवार पत्र मेला में सहभागी होना चाहता हूँ/चाहती हूँ। मेरी प्रविष्टि (पांचों पत्र) सम्मिलित करें। मेरा पता है -

नाम..... पिता.....

पता.....

पिन कोड | | | | | | | दूरभाष | | | | | | | | | | |

हस्ताक्षर प्रतिभागी

प्रत्येक प्रकार के तीन-तीन सर्वश्रेष्ठ पत्र पुरस्कृत किए जाएंगे।

चन्द्रयान आता है

कविता

पद्मा चौगांवकर

चंदा मामा पास तुम्हारे
चन्द्रयान आता है,
हम जानेंगे चन्द्र धरा पर,
कैसी मिट्टी, कितना पानी,
कैसे होंगे जीव वहाँ पर,
कैसा जीवन होता है?
चंदामामा पास तुम्हारे
चन्द्रयान आता है।
अब ना कोई भेद छुपेगा,
होड़-दौड़ दुनिया में होगी
लेकिन हमसे सदा निभाना
अपना जो नाता है,
चंदामामा पास तुम्हारे
चन्द्रयान आता है।
मामा तुम तो दूर बहुत हो,
पहले सा लोरी में आना,
शरद चांदनी, दूध मलाई,
हम को सब कुछ भाता है।
चंदामामा पास तुम्हारे
चन्द्रयान आता है।

● गंजबासौदा (म.प्र.)

चन्दामामा दूर नहीं

कविता

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

मैं जल्दी आऊँगा मिलने
चन्दामामा दूर नहीं

अन्तरिक्ष में चमक रहे हो
सूरज से प्रकाश पाकर
दिन होता तो छिप जाते हो
रात में निकलो इठलाकर

घटते-बढ़ते रहते हो क्यों
क्या पोषण भरपूर नहीं

छत पर चढ़कर तुम्हें निहारूं
बात न तुमसे कर पाता
माँ से क्यों नाराज हो गए
तोड़ा क्यों उनसे नाता

मुझे चॉकलेट दिया न लाकर
बोलो! क्या हो क्रूर नहीं

चरखा वाली बूढ़ी दादी
कोरी कथा-कहानी है
धूल, हवा, हलचल न वहाँ पर
केवल पत्थर-पानी है

ऊबड़-खाबड़ सतह तुम्हारी
हो घमंड में चूर नहीं

चन्द्रयान से आ जाऊँगा
करनी है जीभर मस्ती
अपनी घर के पास बसाना
हम बच्चों की भी बस्ती

मंगलग्रह पर करूँगा पिकनिक
अब खट्टे अंगूर नहीं
चन्दामामा दूर नहीं

● लखनऊ (उ.प्र.)

ऐसे मनाएं दीवाली

बड़े और खतरनाक बम न चलाएं
माता-पिता और बड़ों का आशीर्वाद लें
ईश्वर को याद करें और एक दीप जलाएं
जानवरों को ना सताएं
खाने पीने की चीजें तहजीब से उठाएं
चलते पटाखों के ऊपर ना कूदें
पटाखों पर खाली डिब्बे बोतल ना रखें
आतिशबाजी ना उछालें, ना फेंकें
देर रात तक ना जागें

घूमें चलो

कविता

रमेशचन्द्र पंत

ताल
नैनीताल का
देखें चलो!

नाव में
तो सैर का
अपना मजा है,
ताल में
बस नाव का
मेला लगा है।

बैठ
हम सब नाव में,
घूमें चलो!

कह रही
हैं मछलियाँ
हमसे मिलो तो,
और बत्तखों
को जरा
धीरे छुओ तो।

खूब मस्ती में सभी,
घूमें चलो!

● अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

शब्द चित्र

● राजेश गुजर

दीपक गिनो

● राजेश गुजर

बच्चों,
वृत्तों से
बनी इस
रंगोली में
दीपक भी
बने हैं, ध्यान
से देखो और
बताओ
कुल दीपक
कितने हैं।

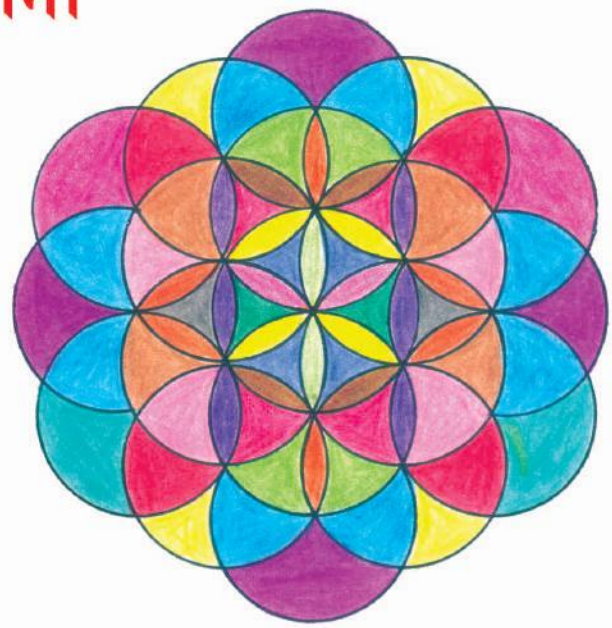

सलिला संस्था, सलूंबर, राजस्थान द्वारा प्रतिवर्ष दिए जाने वाले

बाल साहित्य पुरस्कारों की घोषणा

सलिला संस्था, सलूंबर, राजस्थान द्वारा प्रतिवर्ष दिए जाने वाले **बाल साहित्य** पुरस्कारों की घोषणा सलिला संस्था की अध्यक्ष और कार्यक्रम संयोजिका विमला भंडारी द्वार कर दी गई है।

इस वर्ष के स्वतंत्रता सेनानी औंकारलाल शास्त्री पुरस्कार २०१९ के प्रथम चरण और द्वितीय चरण के तहत प्रथम भाग में बाल साहित्य पुरस्कारों की घोषणा हुई है।

स्वतंत्रता सेनानी औंकारलाल शास्त्री स्मृति पुरस्कार २०१९ के प्रथम भाग के दूसरे चरण में प्रकाशित पुस्तकों पर पुरस्कार की घोषणा की जा रही है। प्रत्येक पुस्तक के रचनाकार को सम्मान स्वरूप २००० की नकद राशि भेंट की जाएगी।

इस बार चुनी गई पुस्तकें और उनके रचनाकारों का विवरण इस प्रकार है–

बाल कहानी विधा के अंतर्गत ''साँची की गुड़िया'', शीला पांडे, लखनऊ (उ.प्र.)

पत्र लेखन विधा के अंतर्गत ''पाती बिटिया के नाम'', विकास दवे, इन्दौर (म.प्र.)

किशोर बाल साहित्य की निबंध विधा के अंतर्गत ''आत्मज्ञान में जगत दर्शन'' पद्मा सिंह, इन्दौर (म.प्र.)

बाल पहेली विधा के अंतर्गत ''आओ करें बुद्धि का विकास'' प्रकाश तातेड़, उदयपुर (राज.) का नाम चयनित किया गया है।

प्रत्येक साहित्यकार को पुरस्कार की नकद राशि भेंट के साथ अभिनंदन पत्र अर्पित कर अंग वस्त्र ओढाकर २२–२३ सितम्बर २०१९ को आयोजित होने वाले दसवें राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन में उपस्थित होने पर सम्मानित किया जाएगा। इन दोनों पुरस्कारों की कुल राशि कुल २०५०० है।

प्रथम भाग के प्रथम चरण में बाल साहित्य की विधा ''पत्र लेखन'' प्रतियोगिता प्रेस विज्ञप्ति निकालकर आयोजित की गई। जिसमें ९४ साहित्यकारों के पत्र प्राप्त हुए। इन पत्रों के मूल्यांकन के बाद मेरिट के आधार पर १५ चयनित पत्रों पर पुरस्कारों की घोषणा की गई है जो इस प्रकार है–

प्रथम पुरस्कार विजेता– नीति श्रीवास्तव, भोपाल डॉ. अनुश्री राठौड़, उदयपुर (राज.) को ३००० रु. की नकद राशि का यह पुरस्कार दोनों विजेताओं को संयुक्त रूप से भेंट किया जाएगा।

द्वितीय पुरस्कार विजेता–डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी, शाहजहाँपुर (उ.प्र.) को २००० की नकद राशि भेंट किया जाएगा।

तृतीय पुरस्कार विजेता– भगवती प्रसाद गौतम, कोटा (राज.), रोचिका शर्मा, चेन्नई, सीमा जैन, ग्वालियर (म.प्र.) को ३००० की नकद राशि संयुक्त रूप से भेंट की जाएगी।

श्रेष्ठ विजेता– श्याम मनोहर व्यास, उदयपुर (राज.), प्रभा परीक, भरूच (गुज.), देवदत्त शर्मा, अजमेर (राज.), डॉ. शीला कौशिक, सिरसा (हरि.), विमला नागला, केकड़ी (राज.), डॉ. सोनी स्वरूप, वाराणसी (उ.प्र.), हरीश कुमार 'अमित', गुरुग्राम (हरि.), डॉ. अरविन्द कुमार, भोपाल (म.प्र.), इंदु गुप्ता, फरीदाबाद (उ.प्र.) प्रत्येक को ५०० रु. की नकद राशि भेंट की जाएगी।

आने वाले समय में इस पुरस्कार का दूसरा भाग (बच्चों के लिए ४००० की नकद राशि) महाविद्यालय और विद्यालय के बालकों के लिए सुरक्षित है। समय पर जिसकी घोषणा की जाएगी।

पुरस्कार की घोषणा के साथ ही सलिला संस्था के पुरस्कार संयोजक संजय शास्त्री (कोलकाता), दिनेश मेवाड़ी (मुंबई), नंदलाल परसारामणि, प्रो. रघुनाथसिंह मंत्री, गोविन्द शर्मा (संरक्षक, सलिला संस्था) एवं चंद्रप्रकाश शास्त्री मंत्री, जगदीश भंडारी, मुकेश राव, मधु माहेश्वरी, शंकरलाल पांडे, शांतिलाल शर्मा, मनीला पोरवाल, दिनेश कचोरिया, सलिला संस्था के पदाधिकारियों ने सभी विजेताओं को अपनी शुभकामनाआ संदेश प्रेषित की है।

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु वर्ष २०१९ के लिए सभी बाल साहित्यकारों से उनकी प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

- इस वर्ष यह पुरस्कार बाल लोककथा के लिए निश्चित किया गया है।
- आप अपनी इस विधा की कोई एक रचना ३१ मार्च २०२० तक अवश्य भेज दें।
- रचना हिन्दी में हो।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवुपत्र' का होगा। जिसे देवपुत्र किसी प्रकाशन संस्थान के सहयोग से भी प्रकाशन की योजना कर सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाओं को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००-५०० रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

प्रविष्टि भेजने का पता -

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहितय पुरस्कार २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९ के लिए यात्रा वृत्तान्त की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी पुरस्कार निधि ५०००/- पाँच हजार रुपए है।

इस हेतु आपकी प्रकाशित कृति (पुस्तक) की तीन प्रतियाँ ३१ मार्च २०२० तक निम्नांकित पते पर सादर आमंत्रित हैं।

प्रविष्टि भेजने का पता –

माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

प्रिय बच्चो!

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति में आयोजित इस प्रतियोगिता में आप बच्चों द्वारा लिखी गई मौलिक एवं स्वरचित कहानियाँ आमंत्रित हैं। आपकी कहानियाँ हमें ३१ मार्च २०२० तक अवश्य मिल जाना चाहिए।

प्रतियोगिता के पुरस्कार हैं –

प्रथम १५००/-, द्वितीय ११००/-, तृतीय १०००/- एवं ५५०/- रुपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

अपनी कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता (पिनकोड सहित) अपना दूरभाष/मोबाइल नं. एवं अपना या अभिभावक का बैक खाता क्रं. आई एफ एस कोड़, खातेदार का नाम बैंक, शाखा का नाम भी अवश्य लिख भेजें जिससे पुरस्कार राशि सीधे उस खाते में जमा की जा सके। प्रविष्टि भेजने का पता –

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०९/२०१९
प्रेषण तिथि ३०/०९/२०१९
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये
अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना